A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 23 जून, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 284, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

पहली बात

'थरूर' का सुरूर और 'शशि' की चंद्र-कलाओं का सम्मोहन

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

जहीन-शाहीन और खूबसूरत कांग्रेस सांसद शशि थरूर के व्यक्तित्व का सुरूर चंद्र-कलाओं की अनबुझी अदाओं की तरह देश के सियासी-फलक पर अपने सम्मोहन का जाल बुन रहा है। कांग्रेस और भाजपा के बीच उनको लेकर द्वंद छिड़ा है। दोनों ने शशि थरूर के लिए अपने दरवाजे बंद नहीं किए हैं। कहना मुश्किल है कि उनकी सियासी चंद्र-कलाओं का यह कारवां किस किनारे पर रूकेगा और किसका हाथ थामेगा?

इसी ऊहापोह के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शशि थरूर को फंसाने के लिए फेंके अपने जाल का दायरा और बढ़ा दिया है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद भारत सरकार ने दुनिया के देशों में भारत का प्रभावी पक्ष रखने वाले शशि थरूर को अब रूस को पूरी तरह भारत की ओर मोड़ने की कूटनीतिक जिम्मेदारी सौंपी है।

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि पांच बार के लोकसभा सदस्य शशि थरूर और कांग्रेस हाइकमान के बीच रिश्ते सामान्य नहीं हैं। वो केरल के उप चुनाव में अपनी अवहेलना को लेकर कांग्रेस नेतृत्व से नाखुश हैं। शशि थरूर ने अपनी नाखुशी छिपाई भी नहीं हैं। तल्खियां इतनी बढ़ चुकी हैं कि उनके जैसे वरिष्ठ नेता ने सार्वजनिक तौर एक्स पर राहुल गांधी को जन्म दिन की बधाई देने से परहेज किया है। टेलीफोन पर राहुल गांधी से बधाई-बधावे की बात अथवा एसएमएस के बारे में भी कोई अधिकृत जानकारी सामने नहीं है।

दो दिन पहले केरल कांग्रेस द्वारा आयोजित रैली में शशि थरूर की अनुपस्थिति को लेकर जारी विवाद के बीच केरल कांग्रेस ने स्पष्ट किया है कि शशि थरूर कांग्रेस के स्टार-प्रचारकों मे शुमार हैं। कांग्रेस रैली मंम शशि थरूर की अनुपस्थिति को मामने में पार्टी ने स्पष्ट किया है कि पहले शशि थरूर विदेश में थे और अब दिल्ली में हैं। कांग्रेस पार्टी का यह बयान शशि थरूर के उस बयान के बाद आया है कि उन्हे रैली में आमंत्रित नहीं किया गया है। इसके साथ ही उन्होंने यह स्वीकार किया कि कांग्रेस हाइकमान के साथ उनके मतभेद चल रहा है। हाल ही में केरल की सीपीएम सरकार की तारीफ के बाद शशि थरूर और कांग्रेस के बीच विवाद गहराने लगा है।

केरल-कांग्रेस की संकरी सियासी गलियों में शशि थरूर का वृहताकार ट्राफिक-जाम का सबब बना हुआ है। इसके विपरीत उनके व्यक्तित्व की ललित-कलाओं पर फिदा भाजपा उनके लिए पलक पावड़े बिछाकर खड़ी है। शशि थरूर का असमंजस जग जाहिर है। वो कांग्रेस में अपनी अवहेलना से परेशान हैं जबकि भाजपा को लेकर उनके मन में गहरा बौध्दिक असमंजस है।

बहलहाल, कांग्रेस प्रधानमंत्री के इस कदम को मछली फंसाने वाले कांटे के रूप में देख रही है, जबकि भाजपा ने इसे देश हित में राष्ट्रवादी पहल मान रही है। यह स्पष्ट नहीं है कि शशि थरूर ने अपने इस नए राजनयिक मिशन के बारे में कांग्रेस के नेतृत्व को सूचित किया अथवा नहीं किया, लेकिन वो अपने मिशन पर निकल चुके हैं। उनके इस नए मिशन के बाद कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति मे लहरें उठने लगी हैं।

लहरें एकतरफा नहीं हैं। इनके साथ कई सवाल जुड़े हैं, जो कांग्रेस की संगठनात्मक संरचना के आगे प्रश्न-चिन्ह खड़े करते महसूस होते हैं। सबसे पहला सवाल तो यह है कि कांग्रेस की संरचनाओं में बौद्धिक संपदा से सम्पन्न शशि थरूर जैसी कद-काठी के नेता खुद को हमेशा परेशान क्यों महसूस करते हैं? सिर्फ हिन्दुस्तान में ही नहीं, कूटनीति के अंतर्राष्ट्रीय पटल पर शशि थरूर का नाम सम्मान से लिया जाता है। बौद्धिक विश्व में उनके मुकाबले खड़े होने वाले लोग भी गिने-चुने ही हैं।

कांग्रेस में शशि थरूर पहले नेता नहीं हैं, जो सियासत के संकरेपन का शिकार हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले मिशन में कांग्रेस के जिन नेताओं को शरीक किया था, उनमें मनीष तिवारी, आनंद शर्मा या सलमान खुर्शीद जैसे नाम थे, जिन्हे कांग्रेस के नेतृत्व ने विदेशों में भारत का पक्ष रखने योग्य नहीं माना था। कांग्रेस ने जिन नेताओं के नाम भेजे थे, वो जन-मानस को उद्वेलित करने वाले नहीं थे।

इससे कांग्रेस के विरोध करने वाले लोगों की इस धारणा को बल मिलता है कि कांग्रेस नेतृत्व दोयम दर्जे के स्तुति-गान करन वाले नेताओं को पसंद करता है। कांग्रेस के इतिहास को खंगाला जाए तो धारणा की पुष्टि करने वाले घटनाक्रमों की कहानियां का अंबार लग जाएगा। यह माना जाता है कि राजनीति का स्वभाव भी चंद्रकलाओं की तरह उतार-चढ़ाव वाला होता है। राजनीति भी सोलह चंद्रकलाओं के उतार-चढ़ाव वाला खेल है। चंद्र-कला की सोलह अवस्थाएं जिन मानवीय गुणों की व्याख्या करती हैं, वो राजनीति को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए जरूरी है। कलाएं धैर्य, दृढ़ता, और सहनशक्ति को अभिव्यक्त करते हैं। इसके साथ ही कला, सौन्दर्य, कोमलता, दया, शांति, स्थिरता जैसे गुणो का प्रतिनिधित्व करते हैं। गुणो की इन कसौटियों पर शशि थरूर जैसे नेता खरे उतरते हैं। ऐसे नेताओं को कांग्रेस ही नहीं , बल्कि भाजपा, सपा, बसपा जैसे सभी दलों में सम्मानजनक स्थान मिलना चाहिए।

बहरहाल, प्रधानमंत्री मोदी ने शशि थरूर को अपना दूत बनाकर अच्छा कदम उठाया है। फिलवक्त रूस के कूटनीतिक रूझानों में पाकिस्तान के प्रति नरमी भारत के गले में हड्डी बनकर अटकी है। वो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निजी आग्रह पर शुक्रवार को रूस रवाना भी हो गए हैं। इसके बाद शशि थरूर ब्रिटेन और ग्रीस से भी राजनयिक संपर्क करेंगे। शशि थरूर दो सप्ताह के अधिकृत सरकारी राजनयिक मिशन पर है। अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में जिम्मेदारी का यह दायरा महत्वपूर्ण माना जाता है। वैसे शशि थरूर विदेश मंत्रालय की स्थायी समिति के प्रमुख भी हैं। इस नाते उन्होंने 17 जून को समिति की बैठक की अध्यक्षता भी की थी। शशि थरूर जैसे नेता ही ऐसे नाजुक मौके पर देश के हितों को तर्कसंगत तरीके से उठाने का सामर्थ्य रखते हैं।

शशि थरूर के मिशन के बारे में आधिकारिक तौर से कुछ भी नही कहा गया है, लेकिन सूत्रों के हवाले से जानकारी मिली है कि अमेरिका और पाकिस्तान के बीच संबंधों में नरमी के बीच रूस को साधना अब महत्वपूर्ण हो गया है। भारत अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और पाकिस्तानी सेना प्रमुख फील्ड-मार्शल असीम मुनीर के भोज के बाद दोनो देश के कूटनीतिक रिश्तों का पुनरावलोकन जरूरी है। इस परिप्रेक्ष्य में थरूर का मिशन महत्वपूर्ण है।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

एक दिन जब
फूल की तरह खिलेंगे हम
फैलेंगे दिगंत में सुगंध बनकर
शब्दों के अरण्य में
ज्वलंत सूर्य से उगेंगे हमारे शब्द
जनाकीर्ण पथ पर
जब सबसे अलग पहचाने जाएँगे हम
तब भी
हमारी गंध में होगी उनकी ही गंध
नेत्रों में दिपता उनका विश्वास
कंठ में माधुर्य
आत्मा में उजाला
तब भी कोई नहीं जानेगा
हमारी अस्थियों में
देह और आत्मा में
उनकी ही गूँज है
कोई नहीं जानेगा
कि हमारा होना
अंतत: उन्हीं का आत्मविस्तार है ....।
(विदेह पिता की स्मृति में ....)

– उत्पल बैनर्जी

आखिर 'युद्ध' में कूदा अमरीका ,ईरान के
तीन परमाणु ठिकाने ध्वस्त

- शिया देश के खिलाफ चलाया ऑपरेशन 'मिडनाइट हैमर'
- ईरान के 3 एटमी ठिकानों पर बी 2 बॉम्बर से की बमबारी
- ईरान का पलटवार, इजराइल के 14 शहरों पर मिसाइलें दागीं

तेलअवीव (एजेंसी)। अमेरिका ने ईरान में 3 परमाणु ठिकानों पर हमला किया है। ये ठिकाने फोर्डो, नतांज और इस्फहान हैं। हमला भारतीय समयानुसार रविवार सुबह 4.30 बजे हुआ। ट्रम्प ने ईरान पर हमले के 3 घंटे बाद देश को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि ईरान की अहम न्यूक्लियर साइट्स पूरी तरह से तबाह कर दी गई हैं। फोर्डो पर बमों की एक पूरी खेप गिरा दी गई है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने ईरान को धमकी देते हुए कहा कि अब उसे शांति कायम करना चाहिए। अगर वह ऐसा नहीं करता है, तो उस पर और बड़े हमले किए जाएंगे। अमेरिका के हमले के जवाब में ईरान ने इजराइल पर मिसाइलें दागीं हैं। इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स ने कहा कि उन्होंने इजराइल पर सबसे बड़ा अटैक किया है और 14 अहम ठिकानों को निशाना बनाया है। वहीं, टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, हाइफा और तेल अवीव के मिलिट्री और रिहायशी ठिकानों पर ईरानी मिसाइलें गिरी हैं। इजराइल में अब तक 86 लोगों के घायल होने की जानकारी सामने आई है। इस बीच पीएम मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान से फोन पर बात की। इसकी जानकारी देते हुए उन्होंने एक्स पर लिखा- हमने मौजूदा हालात पर विस्तार से चर्चा की।

हमने शुरू किया, अमेरिका ने इसे अंजाम तक पहुंचाया

- ईरान के परमाणु स्थलों पर हमले के बाद बोले नेतन्याहू, ट्रंप को बताया सबसे अच्छा दोस्त

तेल अवीव (एजेंसी)। एयर स्ट्राइक के बाद इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिका को अपना करीबी मित्र बताया। हिब्रू भाषा में जारी वीडियो स्टेटमेंट में इजरायली पीएम ने कहा कि इजरायल डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) ने जो शुरू किया उसे अमेरिका ने अंत तक पहुंचाया। बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि उन्होंने संघर्ष की शुरुआत से ही ईरान की 'न्यूक्लियर फैसिलिटी' तबाह करने का वादा पूरा कर दिया है। अमेरिका ने ईरान की न्यूक्लियर फैसिलिटी के खिलाफ वह काम पूरा किया है, जिसे 'आईडीएफ' ने 13 जून को शुरू किया था। नेतन्याहू ने कहा, ऑपरेशन की शुरुआत में ही मैंने आपसे यह वादा किया था।

चर्चा की जरूरत नहीं चलता रहेगा ऑपरेशन

अमित शाह बोले-बारिश में भी नक्सलियों को सोने नहीं देंगे

- राजधानी रायपुर में एनएफएसयू कैंपस का किया शिलान्यास

रायपुर (एजेंसी)। नवा रायपुर में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह एनएफएसयू के रायपुर कैंपस का शिलान्यास किया। नेशनल फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी कैंपस के अलावा हाईटेक फोरेंसिक लैब का भी शिलान्यास किया गया। कार्यक्रम के दौरान शाह ने फिर नक्सलियों को कड़ी चेतावनी दी। शाह ने कहा कि, अब बारिश में भी नक्सलियों को चैन की नींद नहीं सोने देंगे। चर्चा की कोई जरूरत नहीं है, नक्सली अपने हथियार डाल दें। इसके अलावा शाह ने एनएफएसयू को लेकर कहा कि, यहां से ग्रेजुएट/ पोस्ट ग्रेजुएट होने का मतलब नौकरी की गारंटी पक्की। बारिश के समय नक्सली थोड़ा आराम कर लेते थे, लेकिन अब बारिश में भी एंटी नक्सल ऑपरेशन चलता रहेगा। बहुत अच्छी सरेंडर पॉलिसी छत्तीसगढ़ में बनी है। हथियार डाल दीजिए। 31 मार्च 2026 को देश नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा। छत्तीसगढ़ के युवाओं को स्टार्टअप और उद्योगों को बढ़ावा देने में ध्यान देना चाहिए। इसके लिए रायपुर में आई हब की शुरुआत की गई है। युवाओं को विश्वास दिलाता हूं, एनएफएसयू का ग्रेजुएशन मतलब आपके नौकरी की गारंटी है। आने वाले दिनों में सबसे आधुनिक और हरियाली वाली राजधानियों में नवा रायपुर का स्थान होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को सपत्नीक पचमढ़ी के बारिआम गांव में स्थानीय आम विक्रेताओं से आत्मीय भेंट की।

वनों का संरक्षण एवं संवर्धन पहली प्राथमिकता : सीएम

35 लाख लोगों को मिला आजीविका का साधन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश के वनों के संरक्षण एवं संवर्धन को पहली प्राथमिकता में रखा गया है। वनों को हरा-भरा रखने के लिये अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। अब प्रदेश का वन क्षेत्र बढ़ रहा है और ओपन फारेस्ट कम हो रहा है। मध्यप्रदेश वनों में हर्बल औषधियों का भी खजाना है। वर्ष 2024-25 में वन विभाग 6 करोड़ से अधिक की हर्बल औषधियों की आपूर्ति आयुष विभाग एवं सरकारी संस्थानों को कर चुका है। मध्यप्रदेश प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, विशेष वन एवं वन्य प्राणियों की विविधता के लिये जाना जाता है। यहां वनों के रहने और नदियों के बहने का भी संबंध है। वनों की गोद से निकली सोन, नर्मदा, ताप्ती, चंबल के साथ सिंध, बेतवा, केन, धसान, तवा, क्षिप्रा और कालीसिंध जैसी नदियां जन-जीवन को जीवन दे रही हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में वनों से निकलने वाले तेन्दूपत्ता से 15 लाख परिवारों की आजीविका चल रही है। इससे 35 लाख लोग जुड़े हुये हैं, जिनमें 15 लाख पुरूष और 20 लाख से अधिक महिलाएं हैं। प्रदेश के वनों से हर वर्ष 12 लाख बोरा से अधिक तेन्दूपत्ता का संग्रहण किया जाता है। प्रदेश सरकार ने तेन्दूपत्ता संग्रहण करने वालों का पारिश्रमिक 3 हजार से बढ़ाकर 4 हजार रूपए प्रति मानक बोरा कर दिया है। वनोपजों के संग्रहण एवं विपणन के अधिकार ग्राम सभाओं को दिये गये हैं। तेन्दूपत्ता का संग्रहण एवं विपणन मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज व्यापार एवं विकास सहकारी संघ मर्यादित के माध्यम से कराया जाता है।

प्रदेश के 20 जिलों की कुल 243 ग्राम सभाओं द्वारा स्वयं सग्रहण एवं विपणन किया जाता है। लघु वनोपज का स्वामित्व ग्राम सभाओं को सौंपा गया है। प्रदेश में लघु वनोपज व्यवसाय से ग्रामीणों को उचित लाभ दिलाने के लिये अनेक नीतिगत निर्णय लिये गये हैं। लघु वनोपज के अंतर्गत तेन्दूपत्ता के व्यवसाय से होने वाली सम्पूर्ण शुद्ध आय प्राथमिक सहकारी वनोपज समितियों को उपलब्ध कराई जा रही है।

पहलगाम में आतंकियों को पनाह देने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

- एनआईए ने किया अरेस्ट, आरोपियों ने बताया-आतंकी पाकिस्तानी नागरिक, लश्कर से जुड़े

श्रीनगर (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के दो महीने बाद नेशनल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी ने पहलगाम के दो लोगों को गिरफ्तार किया है। एनआईए की जांच में खुलासा हुआ है कि इन दोनों ने हमले को अंजाम देने वाले तीन आतंकियों को पनाह दी थी। गिरफ्तार किए गए आरोपियों के नाम परवेज अहमद जोठार और बशीर अहमद जोठार हैं। पूछताछ में दोनों ने आतंकियों की पहचान बताई और यह भी पुष्टि की कि वे पाकिस्तानी नागरिक थे और प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े हुए थे। एनआईए के मुताबिक, परवेज और बशीर ने हमले से पहले इन तीनों आतंकियों को हिल पार्क स्थित एक अस्थायी ढोक (झोपड़ी) में जानबूझकर ठहराया था। उन्होंने उन्हें खाना और अन्य सुविधाएं मुहैया कराई थी। 22 अप्रैल को हुए इस हमले में 26 लोगों की मौत हो गई थी और 16 लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। आतंकियों ने पर्यटकों को उनकी धार्मिक पहचान के आधार पर चुन-चुनकर निशाना बनाया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 41 °c

न्यूनतम 35°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 23 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

झमाझम बारिश, एमपी-राजस्थान व गुजरात पानी-पानी

● राजस्थान में दिल्ली और गुजरात हाईवे पर भर गया पानी ● गुजरात के अमीरगढ़ में मात्र दो घंटे में 4 इंच हुई बारिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान में तेज बारिश का दौर जारी है। प्रदेश की कई नदियां उफान पर हैं। इस वजह से सिरोही जिले में दिल्ली-गुजरात नेशनल हाईवे पर पानी भर गया। वहीं, जोधपुर में पुलिया पर पानी के बीच से निकल रही कार नाले में गिर गई। पानी में डूबने से तीन लोगों की मौत हो गई। मध्य प्रदेश के चित्रकूट जिले में शुक्रवार रात से हो रही बारिश से बाढ़ जैसे हालात हो गए। गुप्त गोदावरी पहाड़ी पर पानी का बहाव तेज होने से श्रद्धालुओं की एंट्री रोक दी गई है। गुना जिले के फतेहगढ़ में कोहन नदी में ट्रैक्टर-ट्रॉली बहने से तीन युवकों की मौत हो गई। उधर गुजरात के उत्तरी इलाकों में भी भारी बारिश हो रही है। बनासकांठा जिले के अमीरगढ़ में रविवार सुबह दो घंटे में 101.6 एमएम (4 इंच) बारिश होने से बाढ़ जैसे हालात बन गए। यहां की स्थानीय नदी कालेडी उफान पर है। इससे आसपास के गांवों में घुटने तक पानी भर गया है। मौसम विभाग के

अनुसार, जब 24 घंटे में 65.4 एमएम (करीब 2.5 इंच) से ज्यादा बारिश होती है तो उसे भारी बारिश और इससे ऊपर जाने पर बहुत भारी बारिश की कैटेगरी में रखा जाता है।

मानसून का अब केवल दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़ और पंजाब में ही पहुंचना बाकी है। मौसम विभाग ने रविवार को मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश समेत 19 राज्यों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। जबकि बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड समेत आठ राज्यों में यलो अलर्ट है। दिल्ली में शनिवार शाम जोरदार बारिश हुई। ओडिशा के बालासोर जिले में सुवर्णरेखा नदी में अचानक आई बाढ़ से 50 हजार से ज्यादा लोग प्रभावित हैं। नदी का जलस्तर खतरे के निशान (10.36 मीटर) को पार कर गया है। राजस्थान में तेज बारिश का दौर जारी है। प्रदेश की कई नदियां उफान पर हैं। भीलवाड़ा की कोठारी नदी का पानी पुल के ऊपर से बह रहा है। 26 जिलों में यलो अलर्ट जारी किया गया है।

'सुर' यानी गीतकारों और संगीतकारों के बीच गीत सृजन की आत्मा का जश्न

'सुर' में देश के संगीत उद्योग के सबसे प्रतिष्ठित कुछ नाम शामिल

मुंबई। म्यूज़िक कंपोज़र्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया और स्क्रीन राइटर्स एसोसिएशन ने विश्व संगीत दिवस और म्यूजिक कंपोज़र्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के 67 वें स्थापना दिवस के अवसर पर 'सुर' नामक एक संगीतमय ऊर्जा भरा नया गीत जारी किया। यह संगीतकार और गीतकार के बीच गहरे रचनात्मक बंधन और जीवन में संगीत की कालातीत उपस्थिति का जश्न है।

ऐसे समय में जब दुनिया संघर्ष, अलगाव और शोर से विभाजित है, 'सुर' हमें उस एक बात की याद दिलाता है जो हमेशा हमें करीब लाती है। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक, दिल टूटने से लेकर ठीक होने तक, संगीत हमारा सबसे शांत, सच्चा दोस्त रहा है। हमेशा बजता रहता है। हमेशा साथ रहता है।

इंद्रजीत 'टबी' शर्मा और विपिन मिश्रा प्रोजेक्ट द्वारा रचित और राज शेखर, विपिन मिश्रा और इंद्रजीत 'टबी' शर्मा द्वारा लिखित, इस गीत को इससे जुड़े प्रतिभाशाली संगीतज्ञों की प्रभावी चमक ने और भी खास बना दिया है।

'सुर' में भारत के संगीत उद्योग के सबसे प्रतिष्ठित और

सम्मानित कुछ नाम शामिल हैं। संगीतकार शंकर महादेवन, विशाल भारद्वाज, अनु मलिक, स्नेहा खानवलकर और नीरज श्रीधर। जबकि, गीतकारों में इरशाद कामिल, सिद्धार्थ-गरिमा और मयूर पुरी है। चुनिंदा वादक वृंद में राकेश चौरसिया (ग्रैमी पुरस्कार विजेता बांसुरी वादक), ओजस अढिया (प्रसिद्ध तबला कलाकार) हैं।

यह सहयोग न केवल संगीत की शक्ति का जश्न मनाता है, बल्कि यह हर गीत की उत्पत्ति, संगीत और गीत, माधुर्य और अर्थ के बीच पवित्र साझेदारी का सम्मान करता है। इस अवसर पर एमसीएआई के एक प्रतिनिधि ने कहा कि हम अक्सर अंतिम गीत का जश्न मनाते हैं। लेकिन, 'सुर' एक श्रद्धांजलि है जहाँ से यह सब शुरू होता है। एक संगीतकार और एक गीतकार के बीच और यही हमारी साझा नींव है।

यह दोस्ती के बारे में एक गीत है। कला में, जीवन में और संगीत के साथ भी। हमारी यात्रा के हर चरण में, संगीत एक साथी रहा है। यह सहयोग उस सच्चाई को ध्वनि में डालता है। यह रिलीज़ लोगों को संगीत के साथ अपने रिश्ते पर विचार करने के लिए आमंत्रित करती है। वह अदृश्य धागा जिसने जीवन के कई पलों को एक साथ जोड़ा है। 'सुर' सिर्फ़ एक गाना नहीं है। यह एकता, रचनात्मकता और भावनात्मक स्मृति का प्रतीक है। यह संगीत है, जैसा कि यह हमेशा से रहा है। अपने सबसे मानवीय रूप में।

कच्चे तेल की खरीद को लेकर भारत ने बदली रणनीति

ईरान-इजरायल युद्ध ने किया सतर्क,अब इराक पर है नजर

नई दिल्ली (एजेंसी)। इजरायल और ईरान का युद्ध चल रहा है। इस बीच अमेरिका ने भी ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमला बोला दिया है। इन सबके बीच भारत ने कच्चे तेल की खरीद को लेकर अपनी रणनीति में बदलाव किया है। बाजार में आए उतार-चढ़ाव के बीच भारत ने जून में रूस से कच्चे तेल की खरीद बढ़ा दी है। भारत की जून में रूस से तेल खरीद पश्चिम एशिया के आपूर्तिकर्ताओं, सऊदी अरब और इराक से आयातित मात्रा से अधिक रही है। गौरतलब है कि अमेरिकी सेना ने रविवार सुबह ईरान में तीन स्थलों पर हमला किया। वह इस युद्ध में सीधे इजरायल के साथ शामिल हो गया है। इजरायल ने 13 जून को सबसे पहले ईरानी परमाणु ठिकानों पर हमला किया था। वैश्विक व्यापार विश्लेषक कंपनी केपलर के शुरुआती आंकड़ों से पता चलता है कि भारतीय रिफाइनरी कंपनियां जून में रूस से प्रतिदिन 20 से 22 लाख बैरल कच्चा तेल खरीद रही हैं।

यह दो साल का सबसे ऊंचा आंकड़ा है। इसके साथ ही यह इराक, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और कुवैत से खरीदी गई कुल मात्रा से अधिक है। मई में रूस से भारत का तेल आयात 19.6 लाख बैरल प्रति दिन (बीपीडी) था। जून में अमेरिका से भी आयात बढ़कर 4,39,000 बीपीडी हो गया। पिछले महीने यह आंकड़ा 2,80,000 बीपीडी था। केपलर के अनुसार, पश्चिम एशिया से आयात के लिए पूरे महीने का अनुमान लगभग 20 लाख बैरल प्रतिदिन है, जो पिछले महीने की खरीद से कम है। दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक और उपभोक्ता देश भारत विदेशों से लगभग 51 लाख बैरल कच्चा तेल खरीदता है। इसे रिफाइनरी में पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधन में बदला जाता है। भारत पारंपरिक रूप से पश्चिम एशिया से कच्चा तेल खरीदता रहा है।

धर्म, अध्यात्म, संस्कृति और परंपराओं को कायम रखना हर ब्राम्हण का दायित्व : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

जिला स्तरीय ब्राम्हण सम्मेलन एवं जिला स्तरीय ब्राम्हण मेधावी छात्र-छात्राओं के सम्मान समारोह में शामिल हुए

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि धर्म, अध्यात्म, संस्कृति और परंपराओं को कायम रखना और उसे मजबूत बनाने का दायित्व ब्राम्हण समाज का है। ब्राम्हण वर्ग ने सदैव खुद से पहले समाज के सभी वर्गों के कल्याण की कामना की है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने यह बात रविवार को कटनी में जिला स्तरीय ब्राम्हण एवं जिला स्तरी य ब्राम्हण मेधावी छात्र-छात्राओं के सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए कही। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि संगठन में ही शक्ति होती है और संगठित होकर ही ब्राम्हण समाज को सशक्त और मजबूत बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आज इस मंच से सम्मानित होने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्राओं के चेहरे पर खुशी की चमक दिख रही है और माता-पिता भी गौरवान्वित है। श्री शुक्ल ने कहा कि समाज में अच्छा काम करने वालों का सम्मान करना हमारी गौरवशाली परंपरा रही है। उन्होंने समाज के मेधावी बच्चों से प्रेरणा लेकर अन्य छात्र-छात्राओं को भी परीक्षा की तैयारी करने और अपनी कमियां दूर कर परीक्षा में अच्छे अंक अर्जित करने की सीख देते हुए कहा कि परीक्षा में कम अंक आने पर छात्र हताश और निराश न हों और अच्छे अंक लाने की सतत कोशिश करते रहें। उन्होंने यूपीएससी 2024 की परीक्षा की टॉपर शक्ति दुबे का जिक्र करते हुए कहा कि शक्ति ने कई बार के प्रयासों के बाद यूपीएससी की परीक्षा में सर्वोच्च अंक अर्जित किया, जो सभी छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणास्पद है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि ब्राम्हण समाज सिर्फ अपने लिए नहीं, अपनो के लिए है। दीन-दुखियों, पीड़ितों, गरीबों और वंचितों के लिए है। इनकी चिंता करने से समाज में मान-सम्मान मिलेगा।

कार्यक्रम में विजराघवगढ़ विधायक श्री संजय सत्येंद्र पाठक, बहोरीबंद विधायक श्री प्रणय प्रभात पाण्डेय, पूर्व विधायक श्री सुनील मिश्रा, ब्राम्हण समाज के शहर अध्यक्ष श्री रामचन्द्र तिवारी, ब्राम्हाण समाज ग्रामीण अध्यक्ष और नगर निगम अध्यक्ष मनीष पाठक मौजूद रहे। इस मौके पर माध्यमिक शिक्षा मंडल और सीबीएसई की कक्षा 10वीं और 12वीं की परीक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करने वाले समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया।

कोचिंग सेंटरों पर निर्भरता की जांच करेगा शिक्षा मंत्रालय

नौ सदस्यों का पैनल बनाया, लगातार बढ़ रहे हैं डमी स्कूल

नई दिल्ली (एजेंसी)। बढ़ते हुए 'डमी स्कूल', कोचिंग सेंटरो और एंट्रेंस एग्जाम्स की जरूरत और निष्पक्षता को परखने के लिए मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन ने 9 सदस्यों का

● एंट्रेंस एग्जाम्स की जरूरत और निष्पक्षता की भी होगी जांच

पैनल गठित किया है। हायर एजुकेशन सेक्रेटरी विनीत जोशी इसके अध्यक्ष होंगे। वो स्टूडेंट्स के बिना कोचिंग के हायर एजुकेशन में जा पाने के लिए सुझाव देंगे। इसका उद्देश्य कोचिंग सेंटरों पर स्टूडेंट्स की निर्भरता को कम करना है। मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन के सीनियर अधिकारी ने कहा, 'कमेटी स्कूलिंग सिस्टम के

उन गैप्स को पहचानने की कोशिश करेगी जिसकी वजह से स्टूडेंट्स की निर्भरता कोचिंग सेंटरो पर बढ़ी है। साथ ही स्कूलों में रट्टा लगाने वाली पढ़ाई और क्रिटिकल थिंकिंग, लॉजिकल रीजनिंग, एनालिटिकल स्किल्स और इनोवेशन में कमी की पहचान की जाएगी।' दरअसल, जेईई मेन्स और जेईई एड्वांस जैसे इंजीनियरिंग एंट्रेंस एग्जाम्स और नीट जैसे मेडिकल एंट्रेंस एग्जाम्स के लिए ज्यादातर स्टूडेंट्स कोचिंग सेंटर्स पर ही निर्भर रहते हैं। ये स्टूडेंट्स डमी स्कूलों में एडमीशन लेते हैं ताकी क्लासेज अटेंड न करनी पड़ें और पूरा फोकस कोचिंग सेंटर पर रह सके। ऐसे बच्चे सीधे बोर्ड एग्जाम्स देने के लिए जाते हैं। कई एस्पिरेंट्स कॉलेजों में राज्य कोटे का फायदा उठाने के लिए भी डमी स्कूलों में एडमीशन लेते हैं। जैसे दिल्ली से 12वीं करने वाले स्टूडेंट्स को दिल्ली के मेडिकल कॉलेजों में स्टेट कोटे से फायदा मिलता है। ऐसे में बहुत से बच्चे दिल्ली के डमी स्कूलों में सिर्फ इसलिए ही एडमिशन लेते हैं। शिक्षा मंत्रालय के अधिकारियों ने कहा, 'डमी स्कूलों के बढ़ने के पीछे के कारणों का पता लगाया जाएगा।

शिवसेना यूबीटी के दो पूर्व पार्षद बीजेपी में शामिल

● मुंबई में उद्धव ठाकरे को फिर बड़ा झटका, शेलार ने छोड़े तीर

मुंबई (एजेंसी)। उद्धव ठाकरे की अगुवाई वाली शिवसेना यूबीटी को मुंबई में बड़ा झटका लगा है। पार्टी के दो पूर्व पार्षद रविवार को बीजेपी में शामिल हो गए। उद्धव ठाकरे की शिवसेना के काफी नेता और

पदाधिकारी शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना मे भी शामिल हुए हैं। ऐसे में उद्धव ठाकरे को अब मुंबई में 'डबल अटैक' का सामना करना पड़ा रहा है। शिवसेना यूबीटी के दो पूर्व पार्षदों के बीजेपी में आने पर मंत्री और मुंबई अध्यक्ष आशीष शेलार ने बड़ा हमला बोला। उन्होंने शिवसेना (यूबीटी) की स्थिति की तुलना मुंबई की 'खतरनाक' और 'जर्जर' इमारत से की। अध्यक्ष शेलार ने कहा कि शिवसेना (उबाठा) के 50 पूर्व पार्षद पहले ही प्रतिद्वंद्वी गुट में शामिल हो चुके हैं।

अब फिजियोथेरेपिस्ट ने प्रेमी के साथ मिलकर की पति की हत्या

हाथ-पैर पकड़े, फावड़े से काटा, लाश यूपी से ले जाकर उत्तराखंड में फेंकी

मुरादाबाद (एजेंसी)। मेरा पति रविंद्र सिंह कर्ज में डूब चुका था। वो शादी के बाद मुरादाबाद में मुझे गिफ्ट किया मकान बेचना चाहता था। रविंद्र मकान बेच देता तो मैं सड़क पर आ जाती। जबकि अब मुझे लग्जरी लाइफ स्टाइल की आदत पड़ चुकी थी। मैंने अपने प्रेमी परितोष से कहा कि तुम मेरे पति को मार दो, मैं तुमसे शादी कर लूंगी और 10 लाख रुपए भी दूंगी। उसने इसके लिए हामी भर दी। इसके बाद दोनों ने मिलकर रविंद्र का मर्डर कर दिया। यह कबूलनामा है मुरादाबाद की महिला फिजियोथेरेपिस्ट रीना सिंधू (33) का। रीना ने फरारी काट रहे अपने पति रविंद्र को 1 जून को बिजनौर के नगीना में सराय पुरैनी गांव निवासी प्रेमी पारितोष (34) के घर बुलाया और हत्या कर दी।

फिजियोथेरेपी कराने आता था पारितोष, रीना दिल दे बैठी

पुलिस पूछताछ में पता चला कि रीना ने अपने से 20 साल बड़े रविंद्र से दौलत के लालच में शादी की थी। वो रविंद्र के साथ खुश नहीं थी। इस बीच रीना के फिजियोथेरेपी सेंटर पर बिजनौर के नगीना का रहने वाला पारितोष फिजियोथेरेपी कराने आने लगा। थोड़े दिन में ही दोनों में दोस्ती हो गई और फिर दोनों में प्यार हो गया। रीना सिंधू और पारितोष का रिश्ता गहरा होता चला गया। रीना ने पुलिस पूछताछ में बताया कि रविंद्र को बिजनेस में घाटा होने लगा था।

स्टेट-हाइवे को एनएच में बदलने की रफ्तार कम करेगी सरकार

● राज्य खुद सुधारेंगे सड़कें,केंद्र फंड देगा, मोदी ने प्लान बनाने को कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार अब स्टेट हाईवे को नेशनल हाईवे में बदलने की रफ्तार कम करने जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अब हर सड़क को एनएच का दर्जा नहीं मिलेगा, बल्कि राज्य सरकारों को खुद अपने हाईवे सुधारने के लिए पैसे दिए जाएंगे। नए मॉडल के तहत, अपग्रेड के बाद इन सड़कों की देख-रेख राज्य सरकारें करेंगी। केंद्र सरकार अब ग्रीनफील्ड हाईवे और एक्सप्रेसवे बनाने पर फोकस करेगी।

रिपोर्ट्स के मुताबिक पीएम मोदी ने निर्देश हाल ही में ट्रांसपोर्ट मंत्रालय को जुलाई के अंत तक ऐसा मॉडल बनाने कहा है जिससे स्टेट हाईवे को एनएच डिक्लेयर करने की जरूरत ही कम हो। मंत्रालय को स्टेट हाईवे और छोटे पोर्ट्स को जोड़ने के लिए कहा गया है। पिछले 11 साल में सरकार ने 55,000 किमी राज्य हाईवे को एनएच में बदला, जिससे अब नेशनल हाइवे की कुल लंबाई 1.46 लाख किमी हो गई है।

पानी से ग्रीन हाइड्रोजन बनाने वाला उपकरण विकसित

● भारतीय विज्ञानियों ने किया कमाल सौर ऊर्जा से बनेगा हाइड्रोजन

नई दिल्ली (एजेंसी)। लगातार गर्म होती धरती को बचाने के लिए भारत केवल हवा हवाई बातें नहीं करता बल्कि अपने कदमों से साबित करता है कि भारतीय यूं ही धरती को माता नहीं कहते। भारत ने न केवल आगे बढ़कर 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है बल्कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए कई कदम उठा रहा है। इसी सिलसिले में भारतीय विज्ञानियों ने ऐसा उपकरण बनाया है जिससे सौर ऊर्जा का उपयोग करके पानी से ग्रीन हाइड्रोजन बनाया जा सकेगा। गौरतलब है कि ग्रीन हाइड्रोजन सबसे स्वच्छ ईंधनों में से एक है, जो उद्योगों को कार्बन उत्सर्जन से मुक्त करने, वाहनों को चलाने और अक्षय ऊर्जा संग्रहीत करने में सक्षम है, किंतु ग्रीन हाइड्रोजन बनाने में काफी फंड की जरूरत होती है। अब तक ग्रीन हाइड्रोजन बनाने का किफायती उपकरण या तरीका नहीं था। इस उपकरण को

विकसित कर भारतीय विज्ञानियों ने एक बार फिर अपनी मेधा का लोहा मनवाया है। साबित किया कि फंड की कमी में भी भारतीय बेहतरीन परिणाम दे सकते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के स्वायत्त संस्थान, सेंटर फार नैनो एंड साफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के विज्ञानियों की टीम ने अगली पीढ़ी का यह उपकरण विकसित किया है, जो जीवाश्म ईंधन या महंगे संसाधनों पर निर्भर किए बिना, केवल सौर ऊर्जा और पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में मौजूद सामग्रियों का उपयोग करके पानी के अणुओं से ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन करता है।

राजा रघुवंशी हत्याकांड में 2 और आरोपी गिरफ्तार

प्रापर्टी डीलर के बाद पुलिस ने गार्ड को भी दबोचा

इंदौर (एजेंसी)। राजा रघुवंशी हत्याकांड को कल 1 महीना पूरा हो जाएगा। इस एक महीने में भी राजा की मौत की गुत्थी पूरी तरह से नहीं सुलझ पाई है। पुलिस को रोज मामले में नए सुराग मिल रहे हैं। प्रापर्टी कारोबारी सिलोम जेम्स की गिरफ्तारी के बाद अब इस मामले में एक गार्ड का नाम भी सामने आ रहा है। राजा रघुवंशी हत्याकांड की जांच कर रही एसआईटी ने महालक्ष्मीनगर के प्रापर्टी डीलर सिलोम जेम्स को हिरासत में लिया था। सिलोम के पास राजा और सोनम का बैग मिला था। वहीं, अब पुलिस ने बिल्डिंग के गार्ड को भी धर दबोचा है। दरअसल राजा की हत्या के बाद शिलांग से लौटी सोनम हीराबाद के एक फ्लैट में रुकी थी। यह फ्लैट सिलोम जेम्स का था, जिसे राजा के दोस्त

विशाल सिंह ठाकुर ने 17 हजार रुपए के मासिक किराए पर लिया था। सोनम इसी फ्लैट में रह रही थी। हालांकि 8 जून को आकाश की गिरफ्तारी का पता चलने के बाद सोनम कार से गाजीपुर भाग गई और उसका सामान फ्लैट में ही छूट गया।

सीएम ने भंडारी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता, श्रद्धेय सुंदर सिंह जी भंडारी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि युवाओं को मां भारती के लिए समर्पण के संस्कार प्रदान करने, जनसेवा और संगठन की सुदृढ़ता के लिए भंडारी जी ने जीवन समर्पित कर दिया। उनके विचार सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

क्रेन चालक फांसी के फंदे पर झूला

- डायरी में लिखा- तीन भाई और दो भाभियों का नाम, बताया- मौत का जिम्मेदार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ऐशबाग की बिसमिल्ला कॉलोनी में रहने वाले क्रेन चालक ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। उसने एक सुसाइड नोट छोड़ा है। जिसमें दो भाभियों और तीन भाईयों के कारण जान देने की बात लिखी है। सभी पर प्रताड़ित करने और मारपीट करने के आरोप लगाए हैं। वहीं मृतक के भाई ने खुदकुशी के पूर्व पिता से विवाद होने की बात कही है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। एसआई प्रदीप गुर्जर ने बताया कि मोहम्मद मुशर्रफ खान (22) निवासी बिसमिल्ला कॉलोनी क्रेन चालक था। उसके परिवार में चार भाई और पांच बहन हैं। भाईयों में सबसे छोटा मुशर्रफ था। शनिवार की रात उसने अपने कमरे में फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। पुलिस को उसके कमरे से एक डायरी मिली है। इस डायरी में युवक ने अपने तीन भाई और दो भाभियों का नाम लिखा है। आगे लिखा की इन्हीं की प्रताड़ना के कारण मैं जान दे रहा हूं। मुझे आए दिन मारा और पीटा जाता है। इन्हीं के कारण मैं जान दे रहा हूं। एसआई के मुताबिक सुसाइड नोट की हैंड राइटिंग जांच कराई जाएगी। इसके साथ परिजनों के डिटेल बयानों को भी दर्ज किया जाएगा।

भाई बोला- पिता से विवाद के बाद जान दी: मृतक के भाई मोहम्मद बिलाल ने बताया कि पिता शराब पीने के आदि हैं। भाई उनके नशे की लत का विरोध करता था। सुसाइड से पहले उसका पिता से विवाद हुआ था। जिसके बाद उसने सुसाइड कर लिया। वहीं पुलिस ने रविवार को पीएम के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी है। मामले की सभी एंगल पर जांच की जा रही है।

स्कूल शिक्षा विभाग जुर्माना लगाने की तैयारी में

- मप्र के 8 हजार स्कूलों ने अभी तक नहीं दी फीस की जानकारी

भोपाल (नप्र)। मप्र में आदेश जारी होने के बाद भी करीब 8 हजार निजी स्कूलों ने फीस संबंधी जानकारी पोर्टल पर अपलोड नहीं की है। अब स्कूल शिक्षा विभाग इन पर जुर्माना लगाने की तैयारी कर रहा है। यानी यदि किसी स्कूल का पंजीयन शुल्क 1 हजार है, तो उस पर 5 हजार और 5 हजार पंजीयन शुल्क है तो उससे 25 हजार रुपए जुर्माना वसूला जाएगा। इसके लिए लोक शिक्षण संचालनालय की तरफ से एनआईसी से जानकारी मांगी गई है कि कौन-कौन से स्कूल हैं, जिन्होंने अब तक फीस की जानकारी अपलोड नहीं की है। इनकी जानकारी मिलते ही, इन सभी को नोटिस जारी होंगे। बता दें कि मप्र निजी विद्यालय (फीस तथा संबंधित विषयों का विनियमन) अधिनियम-2020 के तहत शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए निर्धारित फीस संरचना (कक्षा एवं संवर्गवार) की जानकारी पोर्टल पर अपलोड करना अनिवार्य किया गया है।

जनजातीय संग्रहालय में दो देशों के संगीत का संगम

विश्व संगीत दिवस पर फ्रेंच सिंगर डेविड वाल्टर्स ने किया परफॉर्म

भोपाल (नप्र)। संगीत की कोई भाषा नहीं होती, यह आत्मा की वह अभिव्यक्ति है जो बिना शब्दों के भी दिल को छू जाती है। विश्व संगीत दिवस के अवसर पर शनिवार शाम मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय में ऐसा ही दृश्य देखने को मिला, जहां भारतीय शास्त्रीयता और फ्रेंच कैरेबियाई ऊर्जा ने सुरों के माध्यम से श्रोताओं को एक सुरीली अनुभूति दी। मप्र शासन संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित 'संगीत संध्या' में दो बेहतरीन प्रस्तुतियों ने उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर

दिया। इस अवसर पर संस्कृति संचालक एन.पी. नामदेव, उप-संचालक डॉ. पूजा शुक्ला, संग्रहाध्यक्ष अशोक मिश्रा, आलियांज फ्रांसिस की निदेशक इनग्रीड ल गार्गासोन, उप-निदेशक रीता गोहाडे और अध्यक्ष अखिलेश वर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

माहौल में जोश भर दिया

पहली प्रस्तुति सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी-कैरेबियाई संगीतकार डेविड वाल्टर्स और उनके बैंड की रही, जिन्होंने अपने नए एल्बम 'सोल ट्रॉपिकल' के गीतों को प्रस्तुत कर माहौल में जोश भर दिया। 'ला वी अ बेल', 'जोडीया', 'डी यो', 'गिम्मे लव', 'नाइट इन माडिनिना', 'डोंट यू' जैसे गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उनकी टीम में ड्रम्स पर एंडी लॉइक बेराल्ड काटेलो और की-बोर्ड पर जेवियर यान बेलिन ने उनका साथ निभाया। करीब डेढ़ घंटे चली इस प्रस्तुति के दौरान वाल्टर्स ने अपनी कैरेबियाई विरासत, आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक धुनों और भारतीय संगीत की आत्मा को एक साथ पिरोया।

डॉ. रीता देव ने वर्षा ऋतु को सुरों में सजाया

दूसरी प्रस्तुति में पद्मविभूषण विदुषी डॉ. गिरिजा देवी की शिष्या डॉ. रीता देव ने राग मेघ मल्हार में विलंबित एक ताल की बंदिश 'जिया मोरा डर लागे...' से शुरुआत की। फिर द्रुत तीन ताल में 'गगन गरज चमकत दामिनी...' गाकर श्रोताओं को मानसून की अनुभूति करा दी। इसके बाद उन्होंने राग मिश्र तिलक कामोद में ठुमरी 'अबकी सावन घर आजा...' प्रस्तुत की और कजरी 'घिर घिर आई सावन की बदरिया...' के साथ संध्या को विराम दिया। तबले पर हितेंद्र दीक्षित, हारमोनियम पर रचना शर्मा, तानपुरे पर आभा जैन और भारती सोनी ने सधी संगत से गायन को समृद्ध किया।

वेटिंग शिक्षकों ने सीएम को खून से लिखा पत्र

कहा- हमारी पुकार सुनिए भैया, लाड़ली बहनों को हर महीने पैसे नहीं, हक चाहिए

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शिक्षक भर्ती वर्ग-1 के वेटिंग अभ्यर्थियों ने नियुक्ति की मांग को लेकर गुहार लगाई हैं। दमोह और इंदौर से आए इन अभ्यर्थियों ने इंजेक्शन से खून निकालकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पत्र लिखा है। पत्र में उन्होंने लिखा - मोहन भैया, लाड़ली बहनों की पीड़ा समझिए, हमारे हक के लिए कुछ करिए। इन अभ्यर्थियों की मांग है कि शिक्षक भर्ती वर्ग-1 (2023) के तहत शेष बचे स्वीकृत पदों पर उन्हें नियुक्ति दी जाए, ताकि उनकी वर्षों की मेहनत व्यर्थ न जाए।

1250 रुपए नहीं, मेहनत से मिला अधिकार चाहिए

वेटिंग अभ्यर्थियों में बड़ी संख्या में महिलाएं भी हैं, जिन्हें राज्य सरकार की लाड़ली बहना योजना के तहत ?1250 मासिक सहायता मिल रही है। लेकिन उनका कहना है,हम लाड़ली बहनें हैं, लेकिन हमें सहायता नहीं, हमारा अधिकार चाहिए।

उन्होंने मुख्यमंत्री को याद दिलाया कि पिछले वर्ष राखी पर उन्होंने संदेश दिया था वर्ग 1 वेटिंग वाली आपकी

लाड़ली बहनों का ख्याल भी रखना मोहन भैया। शिक्षक भर्ती वर्ग-1 के वेटिंग अभ्यर्थियों ने नियुक्ति की मांग को लेकर गुहार लगाई हैं।

2901 पद अब भी खाली, दूसरी ओर फिर निकले नए 58 हजार: शिक्षक भर्ती 2023 के तहत कुल 8720 पदों में से केवल 5053 पदों पर नियुक्ति हुई, जबकि 2901 पद अब तक रिक्त हैं। अभ्यर्थियों का आरोप है कि चयन सूची में नाम आने के बावजूद उन्हें नियुक्त नहीं किया गया। उधर शिक्षा विभाग ने दिसंबर 2024 में 48223 और जनजातीय कार्य विभाग ने 10501 नए शिक्षकों के पद स्वीकृत किए हैं। ऐसे में अभ्यर्थियों का सवाल है कि जब हजारों पद नए स्वीकृत हो सकते हैं, तो पुराने वेटिंग वालों को क्यों नजर अंदाज किया जा रहा है? इससे पहले पैदल मार्च, धरना, और बाल कटवाकर भी विरोध जता चुके हैं।

काउंसलिंग की पुरानी परंपरा इस बार क्यों टूटी: वेटिंग शिक्षक संघ वर्ग-1 की मांग है कि रिक्त पदों पर उन्हें द्वितीय काउंसलिंग के माध्यम से नियुक्त किया जाए। उनका तर्क है कि 2011 और 2018 में भी द्वितीय काउंसलिंग के जरिए नियुक्तियां हुई थीं, लेकिन 2023 में इस परंपरा को तोड़ दिया गया, जिससे सैकड़ों योग्य अभ्यर्थी आज भी बेरोजगार हैं।

बाल कटवा चुके, अब खून से पत्र लिखकर गुहार

अभ्यर्थियों का यह विरोध पहला नहीं है। वे इससे पहले पैदल मार्च, धरना, और बाल कटवाकर भी विरोध जता चुके हैं। अब उन्होंने खून से पत्र लिखकर अपनी व्यथा मुख्यमंत्री तक पहुंचाने की कोशिश की है। वेटिंग शिक्षक संघ के नीरज त्रिवेदी, देशपाल पालीवाल और वंदना पांडे ने सरकार से अपील की है कि गरीब और वंचित तबके के बच्चों के भविष्य के लिए जल्द से जल्द द्वितीय काउंसलिंग कराई जाए, ताकि योग्य शिक्षक नियुक्त हो सकें और सरकारी स्कूलों की शिक्षा गुणवत्ता में सुधार हो।

पूर्व मुख्य सचिव और सहयोगी की लोकायुक्त में जांच शुरू

पूर्व विधायक सकलेचा ने आजीविका मिशन में भ्रष्टाचार की शिकायत की थी

भोपाल (नप्र)। लोकायुक्त भोपाल ने कांग्रेस नेता और पूर्व विधायक पारस सकलेचा की शिकायत के बाद पूर्व मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस तथा आजीविका मिशन के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी ललित मोहन बेलवाल के खिलाफ जांच शुरू की है।

पूर्व विधायक पारस सकलेचा ने 28 अगस्त 2023 को लोकायुक्त में शिकायत दर्ज की थी कि बैंस तथा बेलवाल ने पोषण आहार तथा अन्य योजनाओं में वर्ष 2018-19 से 2021-22 के 4 वर्षों में मात्र 8 जिलों में 500 करोड़ का भ्रष्टाचार किया, जिसका उल्लेख ऑडिटर जनरल ने मार्च 2025 में विधानसभा में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में भी किया। सकलेचा का आरोप है कि इकबाल सिंह बैंस ने पंचायत विभाग के अपने कार्यकाल में 2017 में अपने चहेते बेलवाल को वन विभाग से प्रतिनियुक्ति पर लाकर आजीविका मिशन का सीईओ बना दिया था। दोनों ने षड्यंत्रपूर्वक पोषण आहार बनाने वाली सातों फैक्ट्री का कार्य एग्रो इंडस्ट्री कॉरपोरेशन से लेकर आजीविका मिशन को दे दिया। दिसंबर 2018 में कमलनाथ सरकार बनने पर आजीविका मिशन में घोटाले को देखते हुए सातों फैक्ट्री का कार्य पुनः एग्रो इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन को दे दिया गया । 23 मार्च 2020 को पुनः शिवराज सरकार के आने पर दूसरे दिन ही इकबाल सिंह बैंस को मुख्य सचिव बना दिया गया।

एक वर्ष के लिए कांट्रेक्ट बेसिस मुख्य कार्यकारी अधिकारी बना दिया था: बैंस ने जून 2020 में 2018 में सेवानिवृत्ति ललित मोहन बेलवाल को एक वर्ष के लिए कांट्रेक्ट बेसिस पर आजीविका मिशन का पुनः मुख्य कार्यकारी अधिकारी बना दिया।

कंटेनर में ठूंसकर 81 गोवंश ले जाते तीन पकड़ाए

पुलिस को देखकर भगाया था वाहन, ग्रामीणों ने आरोपी को पीटा

मंदसौर (नप्र)। मंदसौर के पिपलिया मंडी थाना क्षेत्र में गोवंश से भरे कंटेनर को पकड़ा है। इमसें से 81 गोवंश को ठूंसकर भरकर ले जाया जा रहा था। पुलिस को देखकर चालक ने ट्रक भगाया लेकिन ग्रामीणों की सहायता से उसे पकड़

लिया गया। तीन आरोपी गिरफ्तार किए गए हैं। मामला रविवार का है। पुलिस की गाड़ी में बैठे एक आरोपी को पीटने का एक वीडियो सामने आया है। वीडियो में पुलिस वाहन तो दिख रहा है, लेकिन पुलिसकर्मी मौके पर नहीं दिखाई दे रहे हैं। उप निरीक्षक सत्येंद्र सैनी ने बताया कि चालक वाहन को बहुत तेज रफ्तार में लेकर गया था। गांव में काफी लोग बैठे हुए थे, उन्हें चोटें आ सकती थी। 1 आरोपी जिसे गाड़ी में बैठाया था, ग्रामीणों में आक्रोश था कि वह अगर रोड से नीचे ना आते तो यह घटना कर सकता था। कंटेनर के भीतर 2 पार्टीशन में लगभग 81 गोवंश को बर्बरता से रखा गया था।

चेकिंग के दौरान भगाया कंटेनर: पिपलिया मंडी थाने के एसआई सत्येंद्र सैनी ने बताया कि रविवार सुबह थाने के सामने पॉइंट लगाकर चेकिंग की जा रही थी। इस दौरान नसीराबाद जा रहे कंटेनर के ड्राइवर ने चेकिंग पॉइंट से ट्रक भगा लिया। संदेह होने पर ट्रक का पीछा किया गया, इसके बाद ग्रामीणों की मदद से बालागुढ़ा मार्ग पर वाहन को पकड़ा गया।

पुलिस देखकर भागे बदमाश, एक पिटा: आरोपी मोहसिन पिता शेफू, राजा पिता शरीफ नाहर सैयद और शाकिर पिता मुश्ताक सभी निवासी मंदसौर कंटेनर में बर्बरता पूर्वक गोवंश भरकर राजस्थान के नसीराबाद से धार ले जा रहे थे।इस दौरान राजा और शाकिर मौके से भाग गए।

वक्फ का आरोप- कांग्रेस नेता कब्रिस्तान पर गोशाला बना रहे

भोपाल में बीजेपी विधायक रामेश्वर शर्मा से भूमिपूजन कराया, केयरटेकर ने कहा- हाईकोर्ट जाएंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल में कोलार क्षेत्र के अकबरपुर बंजारी में कब्रिस्तान की जमीन पर गोशाला बनाई जा रही है। कब्रिस्तान के केयरटेकर शेख मतीन ने शिकायत करते हुए आरोप लगाया है कि इस जमीन पर वक्फ बोर्ड का रजिस्टर्ड कब्रिस्तान की है, जिस पर कांग्रेस नेता अश्विनी श्रीवास्तव कब्जा कर गोशाला बनाने की तैयारी कर रहे हैं। केयरटेकर शेख मतीन का कहना है कि 21 जून की शाम को बड़ी संख्या में लोग कब्रिस्तान परिसर में पहुंचे और टेंट लगाना शुरू कर दिया। जानकारी मिलने पर उन्होंने कोलार थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। खास बात ये है कि रविवार सुबह कांग्रेस नेता अश्विनी श्रीवास्तव ने गोशाला का भूमिपूजन हुजूर से बीजेपी विधायक रामेश्वर शर्मा से कराया।

वक्फ बोर्ड का सूचना बोर्ड अज्ञात लोगों ने उखाड़ा: शेख मतीन ने अपनी शिकायत में बताया कि यह जमीन जिला खसरा नंबर 112 के तहत आती है, जो वक्फ बोर्ड की संपत्ति के रूप में पंजीकृत है। वक्फ बोर्ड रजिस्ट्रेशन क्रमांक-766 के अनुसार, यह जगह एक मान्यता प्राप्त कब्रिस्तान है और मध्यप्रदेश शासन के गजट नोटिफिकेशन में भी इसका जिक्र है। शिकायत में केयरटेकर ने कांग्रेस नेताओं अश्विनी श्रीवास्तव और राम यादव पर आरोप लगाया कि उन्होंने मिलकर कब्रिस्तान की जमीन पर अवैध रूप से कब्जा कर गोशाला निर्माण के लिए भूमिपूजन कराया।

विधायक रामेश्वर शर्मा बोले- ये गंगा-जमुनी तहजीब

भूमिपूजन में पहुंचे बीजेपी विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा- कांग्रेस नेता अश्विनी श्रीवास्तव मेरे पास आए थे और उन्होंने कहा कि उन्हें यह जमीन अलॉट हुई है। वे यहां निःशुल्क गोशाला बनाना चाहते हैं। उन्होंने बताया कि यह काम पूरी तरह सेवा भाव से प्रेरित है। मुझे लगा कि यह पुण्य का काम है, इसलिए मैं भूमिपूजन में शामिल हुआ।

वेब सीरीज पर बोले अखिलेंद्र मिश्रा

जो काम हम अपने परिवार के साथ नहीं देख सकते वह क्यों करें ?

भोपाल (नप्र)। रंगमंच और बॉलीवुड के कलाकार अखिलेंद्र मिश्रा भोपाल पहुंचे, इस दौरान उन्होंने जहां एक तरफ वेब सीरीज को लेकर खुलकर बात की तो दूसरी तरफ उन्होंने हिंदी को लेकर भी अपनी बात रखी, साथ ही हिंदी में कविताएं भी सुनाई, उन्होंने बताया कि वे इन दिनों सागर में फिल्म 'सत्यकथा' की शूटिंग में व्यस्त हैं और बीते दस दिनों से मध्यप्रदेश में ही हैं। इसके साथ ही भोपाल के रंगमंच समूह 'अविराम थिएटर ग्रुप' के साथ उनका गहरा जुड़ाव है, जहां वे युवाओं के साथ संवाद भी कर रहे हैं।

मैंने अब तक वेब सीरीज नहीं की, क्योंकि परिवार के साथ नहीं देखी जा सकती: वेब सीरीज के बढ़ते प्रभाव पर उन्होंने कहा कि अब तक मैंने वेब सीरीज नहीं की थी, क्योंकि उनमें गाली-गलौच और अश्लीलता होती है। जो मैं अपने परिवार के साथ नहीं देख सकता, वो काम क्यों करूं? पैसा, शोहरत, गाड़ी, बंगला ये सब मिल सकता है, लेकिन एक कलाकार

का काम सिर्फ अभिनय नहीं होता, उसका दायित्व समाज के प्रति भी होता है। हाल ही में उन्होंने एक पारिवारिक वेब सीरीज 'पिरामिड' में काम करना शुरू किया है। उन्होंने कहा कि यह ऐसी सीरीज है जिसे लोग अपने परिवार के साथ देख सकते हैं। हम समाज को क्या दे रहे हैं, यह सोच जरूरी है। कहीं गलती से भी कोई गलत शब्द निकल जाए तो अफसोस होना चाहिए।

सुनाई हिंदी में कविता

मैं संस्कृति की स्वस्ती हूं, मैं सभ्यता की प्रशस्ति हूं, मैं संस्कृति की पुत्री हूं, मैं भारत की रीढ़ की अस्थि हूंज मैं हिंदी हूं। यह ओजपूर्ण पंक्तियां हैं अभिनेता अखिलेंद्र मिश्रा की। दैनिक भास्कर से विशेष बातचीत में उन्होंने अपने जीवन, लेखन, थिएटर और वर्तमान दौर की वेब सीरीज पर खुलकर बात की। अखिलेंद्र मिश्रा ने बातचीत के दौरान एक प्रभावशाली कविता भी सुनाई, जिसकी पंक्तियां थीं। मैं गंग हूं, गंगाल हूं, गंगा गंगेश हूं, मैं क्रांति अशेष हूं, सिंधु का अवशेष हूं, क्रांतिकारियों का आवेश हूं, स्वतंत्रता संग्राम का वेश हूं, विश्व में कहीं भी रहूं, मैं संपूर्ण भारत देश हूं-मैं हिंदी हूं, मैं हिंदी हूं, मैं हिंदी हूं।

अभिनय, अभिनेता और अध्यात्म यह सिर्फ किताब नहीं, संवाद का माध्यम भी

अखिलेंद्र मिश्रा ने बताया,करीब डेढ़ साल पहले मेरी किताब 'अभिनय, अभिनेता और अध्यात्म' आई है। मैं इसे लेकर देशभर के संस्थानों में युवाओं से मिल रहा हूं। पुणे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट, एनएसडी, बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी जैसे कई संस्थानों में इसके सत्र हो चुके हैं। अब जहां-जहां छात्र इसे पढ़ रहे हैं, वहां मैं खुद जाकर संवाद कर रहा हूं। सवालों के जवाब दे रहा हूं, स्पष्टता के साथ मूल समझा रहा हूं। उन्होंने कहा कि हिंदी में पहली बार इस विषय पर कोई किताब आई है और इसे व्यापक सराहना मिल रही है। इससे छात्रों को समझ में आ रहा है कि अभिनय सिर्फ कला नहीं, बल्कि आत्मिक साधना भी है।

पार्षद के बेटे ने मां-बेटी को कुचला था

ग्वालियर में हादसे से पहले थार पर स्टंट कर रहा था, पुलिस ने गिरफ्तार किया

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में शुक्रवार रात जिस थार ने मां-बेटी को कुचला था, उसके ओरोपी चालक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी नगर निगम में भाजपा पार्षद रेखा चंदन राय का बेटा हर्ष राय (27) है। हर्ष अप्रैल में हुए गोलीकांड मामले में फरार चल रहा था। हर्ष का स्टंट करते हुए एक वीडियो भी सामने आया है। इस वीडियो में वह चलती काले रंग की थार की ड्राइविंग सीट का गेट खोलकर खड़ा है। पैसेंजर सीट पर उसका दोस्त हर्ष कुमार भी यही स्टंट कर रहा है। अन्य साथी उनका वीडियो बना रहे थे। ये वीडियो घटना से कुछ देर पहले का बताया जा रहा है। ये वही जगह है जहां घटनाक्रम हुआ था। दरअसल, शक्रवार रात मोतीझील के पास बदनापुरा मोड़ पर एक थार ने बाइक सवारों को कुचल दिया था। पुलिस मौके पर पहुंची और सभी घायलों को हॉस्पिटल पहुंचाया था। जहां डॉक्टरों ने मां-बेटी को मृत घोषित कर दिया था। बेटा घायल है। आरोपी हर्ष राय को पुलिस ने शनिवार देर रात गिरफ्तार किया।

हर्ष पुलिस से बोला- थार दोस्त के पास है: थार की तलाश करते हुए थाना प्रभारी जीतेंद्र तोमर हर्ष तक पहुंचे। पूछताछ करने पर उसने बताया कि

उसकी थार दोस्त के पास है। ये भी कहा कि हादसे वाले समय वह शहर में नहीं था। पुलिस ने हर्ष की मोबाइल लोकेशन ट्रेस की तो पता चला कि वह शुक्रवार रात घटनास्थल पर ही था। इससे पुष्टि हो गई कि थार हर्ष चला रहा था। एसएसपी धर्मवीर सिंह ने बताया,बदनापुरा रोड पर मां-बेटी को कुचलने के मामले में पुलिस ने थार को जब्त कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने घटना के समय खुद को बाहर बताकर गुमराह करने की कोशिश की। इस पर भी कार्रवाई की जाएगी।

संपादकीय

चुनाव फुटेज पर सियासत

भारत निर्वाचन आयोग दवारा चुनाव फुटेज को लेकर हाल में जारी आदेश को लेकर सियासी बवाल मच गया है। बेशक यह राजनीति से प्रेरित है, लेकिन जो सवाल और शंकाएं खड़ी की जा रही हैं, वो बेबुनियाद हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि जिस तरह से यह आदेश जारी हुआ है, वह आयोग चुनाव पारदर्शिता के प्रति प्रतिबद्धता कम, उससे ज्यादा संदेहास्पद बनाना ज्यादा लगता है। चुनाव आयोग द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि अब चुनावों के दौरान खींची गई फोटो, सीसीटीवी फुटेज, वेबकास्टिंग और वीडियो रिकॉर्डिंग सिर्फ 45 दिनों तक ही सुरक्षित रखी जाएंगी। इसके बाद सारा डेटा डिलीट कर दिया जाएगा। चुनाव आयोग ने 30 मई को सभी राज्यों के मुख्य चुनाव अधिकारियों को निर्देश दिया कि अगर किसी निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव नतीजे को कोर्ट में चुनौती नहीं दी जाती, तो 45 दिन बाद ये सारा डेटा नष्ट कर दिया जाए। आयोग के मुता?बक यह फैसला फुटेज के दुरुपयोग और सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही भ्रामक जानकारियों को रोकने के लिए लिया गया है। चुनाव आयोग का कहना है कि हाल ही में कुछ गैर-उम्मीदवारों ने चुनावी वीडियो को तोड़-मरोड़कर गलत नरेटिव फैलाने की कोशिश की, जिससे मतदाताओं में भ्रम की स्थिति पैदा हुई। गौरतलब है कि नए मुख्यं चुनाव आयुक्त के कार्यकाल में लिया गया यह पहला विवादित निर्णय है। वर्तमान मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने अपना पदभार 15 मार्च 2024 को पदभार संभाला था।? विपक्षी कांग्रेस ने इस निर्णय पर कड़ी आपत्ति जताई है। पार्टी ने आयोग के इस नियम का विरोध करते हुए कहा कि पहले एक साल तक इस डेटा को सेफ रखा जाता था, ताकि लोकतांत्रिक व्यवस्था में कभी भी इसकी जांच हो सके। आयोग का यह नियम पूरी तरह से लोकतंत्र के खिलाफ है। इसे तुरंत वापस लेना चाहिए। लेकिन इसके पहले 20 दिसंबर 2024 को केंद्र सरकार ने चुनाव नियम बदलकर पोलिंग स्टेशन के सीसीटीवी, वेबकास्टिंग और उम्मीदवारों की वीडियो रिकॉर्डिंग को सार्वजनिक करने से रोक दिया था। गौरतलब है कि जनवरी 2024 में चंडीगढ़ मेयर इलेक्शन के दौरान चुनाव अधिकारी अनिल मसीह के बैलट पेपर से छेड़छाड़ करने के सीसीटीवी फुटेज सामने आए थे। इसके बाद आयोग ने दो बार नियम में बदलाव किया। आयोग का कहना था कि उक्त फुटेज का यूज गलत नरेटिव के लिए होता था। चुनाव आयोग के अनुसार वोटिंग और मतगणना जैसे चुनावी चरणों की रिकॉर्डिंग का कोई कानूनी प्रावधान नहीं है। यह काम आंतरिक निगरानी और पारदर्शिता के लिए किया जाता है। इसके पहले चुनाव से जुड़ी रिकॉर्डिंग एक साल तक संभाल कर रखी जाती थी, ताकि जरूरत पड़ने पर कोई कानूनी जांच हो सके। नई व्यवस्था में ऐसा तभी हो सकेगा, जब कोई 45 दिनों के अंदर शिकायत करे। हालांकि, कांग्रेस ने चुनाव से जुड़े इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट्स पब्लिक करने से रोकने के नियम को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। तब इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने इसे चुनाव आयोग की स्वतंत्रता पर हमला बताया था। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था को खत्म कर रही है। चुनाव आयोग के आदेश के मुताबिक अगर 45 दिनों में चुनाव को लेकर कोई शिकायत नहीं होगी तो चुनाव कवरेज के सारे फुटेज डिलीट कर दिए जाएंगे। इसका अर्थ यह है कि यदिद चुनाव को लेकर गड़बड़ी की कोई शिकायत 45 दिनो बाद सामने आई तो उसका कोई सबूत बाकी नहीं रहेगा। आयोग की इस बात में दम है कि चुनाव से सम्बन्धित तमाम फुटेज आदि को संभालना कठिन काम है। लेकिन इसे कम से कम 1 साल तक तो संभाल कर रखा ही जाना चाहिए।

एमएसपी में वृद्धि और किसान आंदोलन की दिशा

नजरिया

अमित बैजनाथ गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

हाल ही में मोदी सरकार ने 2025-26 के खरीफ सत्र के लिए धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 69 रुपए बढ़ाकर 2,369 रुपए प्रति क्विंटल करने की घोषणा की है। इसी तरह अन्य कई फसलों की एमएसपी भी बढ़ाई गई है। सरकार का दावा है कि हर फसल के लिए लागत के साथ 50 फीसदी को ध्यान में रखा गया है। वहीं किसानों के लिए ब्याज छूट को बनाए रखने का फैसला भी लिया गया है। किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) पर दो लाख तक का लोन चार फीसदी ब्याज पर मिलता रहे, इसकी भी व्यवस्था की गई है। गौरतलब है कि देश में 7.75 करोड़ से अधिक किसान क्रेडिट कार्ड खाते हैं। इससे अब छोटे और सीमांत किसानों को बड़ा फायदा हो सकेगा। यह योजना अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री रहते हुए शुरू की गई थी। इससे किसानों के लिए अपने काम को लेकर लोन लेना आसान हो गया है। इस योजना में दो लाख तक के लोन पर कोई गारंटी नहीं ली जा रही है।

सरकार का दावा है कि किसानों के हितों के लिए लगातार फैसले लिए जा रहे हैं और उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। उसका कहना है कि खरीफ फसलों के एमएसपी में वृद्धि से उत्पादकों को उनकी उपज के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित किया जा सकेगा। खास बात यह है कि अधिकतर फसलों की एमएसपी अब लागत के लगभग डेढ़ गुना तक हो चुकी है, जिसकी मांग लगातार हो रही थी। गौरतलब है कि एमएसपी बढ़ाने को लेकर किसान लगातार आंदोलन करते रहे हैं। अब सवाल यह है कि क्या इस बार एमएसपी बढ़ने से अगली बार आंदोलन नहीं होगा! असल में एमएसपी सरकार द्वारा किसानों से तय दर पर फसल खरीदने की गारंटी है। इसका मकसद किसानों को उनकी फसल पर कम से कम एक निश्चित राशि देना है। एमएसपी की वजह से किसानों को बाजार के उतार-चढ़ाव से सुरक्षा मिलती है। एमएसपी की शुरुआत साल 1967 में हुई थी।

कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि एमएसपी की कानूनी गारंटी देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ बाजारी मुद्रास्फीति को भी नियंत्रित करेगी, जिससे किसानों को बिचौलियों से शोषण से बचाया जा सकेगा। वहीं इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल रिलेशंस-ऑर्गनाइजेशन फॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट का अध्ययन बताता है कि खेती की कीमतों को कृत्रिम रूप से कम रखने की पक्षपाती सरकारी नीतियों के कारण देश के किसान वर्ष 2000 के बाद से लगातार घाटा उठा रहे हैं। रिपोर्ट कहती है कि पक्षपातपूर्ण सरकारी नीतियों और कृषि कीमतों के कारण किसानों को वर्ष 2022 में 14 लाख करोड़ रुपए और 2000-2017 के दौरान 2017 की कीमतों पर 45 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। इसके चलते ही किसान आत्महत्या करने को मजबूर हैं। वहीं सरकार का दावा है कि 2022-23 में किसानों से 60 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक धान और 26 मिलियन मीट्रिक टन गेहूं की खरीद कर करोड़ों रुपए हस्तांतरित किए गए।

असल में एमएसपी को लेकर किसानों ने कई बार आंदोलन किया है। वे हर फसल को एमएसपी पर खरीदने की मांग कर रहे हैं। इसके लिए पिछली बार उन्होंने लगभग सभी फसलों की एक सूची सरकार को सौंपी थी। एमएसपी बढ़ाने को लेकर केंद्र सरकार का तर्क है कि इससे किसानों की आय बढ़ेगी। हालांकि किसान नेता सरकार के इस दावे से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार के कई उपाय हो सकते हैं। इसमें एक है मूल्य स्थिरता कोष का गठन यानी कि जब फसलों की बाजार कीमत एमएसपी से नीचे चली जाए, तो सरकार इसकी भरपाई करे। वहीं किसानों को धान-गेहूं की फसल की बजाय ज्यादा कीमत देने वाली फसलों को पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। किसानों को फल, सब्जी, मवेशी और मछली पालन के लिए बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उनका कहना है कि कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग की आड़ में किसानों को कंपनियों के भरोसे नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

इस साल की शुरुआत में सर्वोच्च न्यायालय ने प्रदर्शनकारी किसानों से बातचीत न करने एवं उनकी शिकायतों का समाधान ना करने के लिए केंद्र सरकार की आलोचना की थी। कोर्ट ने केंद्र से एमएसपी के लिए विधिक गारंटी की मांग वाली नई याचिका पर जवाब देते हुए किसानों की मांगों पर विचार करने का आग्रह किया था। यह घटनाक्रम पंजाब-हरियाणा सीमा पर किसान समूहों द्वारा लंबे समय से चल रहे विरोध प्रदर्शन से संबंधित था। याचिका में कृषि कानूनों को निरस्त करने के बाद वर्ष 2021 के किसान विरोध प्रदर्शन के दौरान किए गए वादों के आधार पर फसलों पर एमएसपी के लिए विधिक गारंटी की मांग की गई थी। इस याचिका में मांग की गई थी कि कृषि उत्पादकों के लिए स्थिर आय सुनिश्चित करने के क्रम में एमएसपी को विधिक अधिकार के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। इस पर सर्वोच्च न्यायालय ने कोई प्रत्यक्ष आदेश जारी न करते हुए इस मुद्दे को सुलझाने के लिए उच्चाधिकार प्राप्त समिति का उपयोग करने का सुझाव दिया तथा इस संदर्भ में केंद्र से तुरंत जवाब देने को कहा था।

असल में देश में किसानों का विरोध प्रदर्शन वर्ष 1991 के आर्थिक उदारीकरण से संबंधित लंबे समय से चली आ रही शिकायतों से प्रेरित है, जिसमें कृषि की तुलना में औद्योगीकरण को प्राथमिकता दी गई थी। इससे ग्रामीण क्षेत्रों, जहां किसान कम फसल लाभ एवं बढ़ती लागत का सामना कर रहे हैं, में संकट बढ़ रहा है। यद्यपि सरकार कई फसलों के लिए एमएसपी निर्धारित करती है, लेकिन इसका क्रियान्वयन सीमित है तथा इसके तहत खरीद ज्यादातर चावल एवं गेहूं की ही होती है। किसान विशेषकर गैर-प्रमुख फसल क्षेत्रों के संदर्भ में अक्सर उत्पादन लागत से कम कीमत पर फसल बेचने को मजबूर होते हैं। विश्व व्यापार संगठन के समझौते व्यापार प्रतिबंध लगाने या किसानों को सब्सिडी प्रदान करने की भारत की क्षमता को सीमित करते हैं।

प्रदर्शनकारी किसानों के अनुसार, इससे किसानों के लिए खरीद नीतियों एवं सब्सिडी को नियंत्रित करने की भारत की क्षमता में बाधा उत्पन्न हुई है। किसानों की प्रमुख मांगों में प्राथमिक मांग एक ऐसे कानून की है, जो सभी फसलों के लिए एमएसपी की गारंटी देता है। यह स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट पर आधारित है, जिसमें उत्पादन लागत पर 50 प्रतिशत लाभ मार्जिन की सिफारिश की गई है। वहीं किसानों की अन्य प्रमुख मांगों में किसानों और मजदूरों के लिए पूर्ण ऋण माफी। किसानों के लिये मुआवजा और पेंशन, विशेष रूप से विरोध प्रदर्शन या कृषि संकट से प्रभावित किसानों के लिए। कृषि श्रमिकों के लिए बेहतर कार्य स्थितियां और मजदूरी और भूमि और जल पर स्वदेशी लोगों के अधिकारों का संरक्षण शामिल है। इन मांगों पर मोदी सरकार लगातार कहती रही है कि वह किसानों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और उनकी भलाई के लिए हरसंभव कदम उठाती रहेगी।

हालांकि एमएसपी पर बार-बार कहा गया है कि इसके लिए कानूनी गारंटी देना अव्यावहारिक होगा, क्योंकि इसमें लॉजिस्टिक चुनौतियां और खरीद की उच्च लागत शामिल है। सरकार ऐसी नीति के आर्थिक प्रभावों को लेकर भी चिंतित है, जिसमें खाद्य मुद्रास्फीति और बजटीय बाधाएं शामिल हैं। देश भर में सभी फसलों पर एमएसपी लागू करना अपर्याप्त बुनियादी ढांचे के कारण कठिन है, जैसे कि मंडी प्रणाली। सभी फसलों को एमएसपी पर खरीदने के लिए अत्यधिक वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होगी, जिससे बजटीय बाधाएं और संभावित आर्थिक तनाव बढ़ेगा। एमएसपी के कारण खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ सकती हैं, जिससे उपभोक्ता प्रभावित होंगे। एमएसपी का सांविधिकरण कृषि बाजारों में आपूर्ति और मांग की वर्तमान गतिशीलता को बाधित कर सकता है, जिससे अकुशलताएं उत्पन्न हो सकती हैं। वहीं विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौते सरकार की सब्सिडी प्रदान करने या कृषि व्यापार पर प्रतिबंध लगाने की क्षमता को सीमित करते हैं, जिससे एमएसपी के सांविधिकरण की प्रभावशीलता कमजोर हो सकती है।

असल में एमएसपी तय करने के लिए कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी) की रिपोर्ट का इस्तेमाल किया जाता है। सीएसीपी उत्पादन लागत, बाजार के रुझान और मांग-आपूर्ति के हिसाब से एमएसपी तय करता है। एमएसपी की गणना के लिए सीएसीपी खेती की लागत को तीन हिस्सों में बांटता है। इसमें फसल उत्पादन के लिए किसानों के नकदी खर्च के साथ-साथ पारिवारिक श्रम का भी हिसाब लगाया जाता है। एमएसपी में बढ़ोतरी से किसानों को लाभकारी मूल्य मिलता है और फसल विविधीकरण को बढ़ावा मिलता है। सीएसीपी ने अपनी मूल्य नीति रिपोर्ट में एमएसपी पर एक कानून बनाने का सुझाव दिया था। ऐसा किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक बताया गया था। उसका कहना था कि सरकार को कृषि और पशुपालन को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे लोगों द्वारा भरपूर खाद्य पदार्थों का सेवन किया जा सके। ऐसा करने के लिए धान और गेहूं के एमएसपी को फ्रीज कर दिया जाए। इससे किसान सरकारी तंत्र पर निर्भरता से बचेंगे और उनका शोषण रुकेगा।

क्या 'भूलने की आदत' देश की राजनीति के लिए 'अमृत' है?

राजीव खण्डेलवाल
(लेखक कर सलाहकार एवं पूर्व नगर सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

दरअसल देश की राजनीति एक अदृश्य 'भूलने' की आदत के इर्द-गिर्द घूम रही है। यह केवल नेताओं की नहीं, आम जनता की भी स्मृति दुर्बलता है। यह 'भूल' ही समस्त तंत्रों के शासन (क्रियान्वयन) में आई गिरावट का मूल कारण है।

सामूहिक विस्मृति की कुछ मिसालें

1. न्यायपालिका में न्याय का भुलाना: 14 मार्च 2025 न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के घर लगी आग में मिले भारी नकदी व अधजले नोट। कोई एफआईआर दर्ज नहीं? तीन सदस्यीय जांच आयोग की रिपोर्ट के परिपेक्ष में सिर्फ महाभियोग की तैयारी। उच्चतम न्यायालय इस बात को भूल गया कि बिना प्राथमिकी दर्ज किये न्यायमूर्ति के खिलाफ तथाकथित आय से अधिक धन का मामला या उनके खिलाफ रचा गया षड़यंत्र (जैसा कि आरोप स्वयं न्यायमूर्ति ने लगाया था) की जांच व कार्रवाई हो नहीं सकती है।

2. महाकुंभ भगदड़-कितनी मौतें? 29 जनवरी 2025 को प्रयागराज महाकुंभ में मची भगदड़ में सरकार के अनुसार 30 लोगों की मृत्यु हुई। जबकि बीबीसी ने अपनी जांच में 82 मृतकों की पुष्टि की है। मृतकों की अधिकृत सूची उत्तर प्रदेश सरकार ने आज तक जारी नहीं की। क्योंकि लोग 'भूलने' के कारण 'पूछने' से तो रहे। तीन सदस्यीय जांच कमीशन बैठाया, जिसे एक महीने में रिपोर्ट देने को कहा। रिपोर्ट का पता नहीं।

3. न्यायमूर्ति शेखर यादव की टिप्पणी पर चुप्पी!-8 दिसंबर 2024 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति शेखर कुमार यादव द्वारा 'विश्व हिंदू परिषद' के एक कार्यक्रम में मुसलमानों के लिए 'कठमुल्ला' शब्द का इस्तेमाल पर उच्चतम न्यायालय ने 10 दिसंबर 2024 को उनके खिलाफ कार्रवाई करने की बात कही। साथ ही न्यायमूर्ति शेखर यादव के विरुद्ध महाभियोग चलाने की एक याचिका राज्यसभा के सभापति उपराष्ट्रपति को भी दी गई, जो पिछले 6 महीने से याचिका में किए गए सांसदों के 'हस्ताक्षर सत्यापित करने के आधार पर लंबित है'। मार्च 2025 में राज्यसभा सचिवालय से पत्र प्राप्त होने के बाद पर सुप्रीम कोर्ट ने आगे की प्रक्रिया को रोक दिया। इसे भी छह माह हो गए। जस्टिस यादव ने अभी तक न तो अपने 'विवादित'' कथन वापस लिया न ही उसके लिए माफी मांगी।

4. चंडीगढ़ मेयर चुनाव: 30 जनवरी 2024 को हुये चंडीगढ़ मेयर चुनाव में चुनाव अधिकारी अनिल मसीह द्वारा मतपत्रों के साथ व गिनती में धांधली करने पर उच्चतम न्यायालय ने हैरान होकर अनिल मसीह के विरुद्ध कदाचार व झूठा बयान देने के लिए धारा 340 के अंतर्गत आपराधिक कार्रवाई शुरू करने के निर्देश दिए। क्या कार्रवाई हुई? किसी को पता नहीं।

5. रमेश बिधूड़ी की अभद्र भाषा: 21 सितंबर 2023 को लोकसभा में भाजपा सांसद रमेश बिधूड़ी द्वारा बसपा सांसद कुंवर दानिश अली के खिलाफ की गई अभद्र व सांप्रदायिक टिप्पणी के मामले को लोकसभा अध्यक्ष ने विशेषाधिकार समिति को सौंपा और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने 'कारण बताओ नोटिस' जारी किया। आगे क्या हुआ, पता नहीं।

6. मोरबी पुल हादसा: 31 अक्टूबर 2022 को 143 वर्ष पुराने गुजरात मोरबी केबल ब्रिज हादसे में गठित विशेष जांच दल की ओरेवा कंपनी के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत मुकदमा दर्ज करने की सिफारिश के बावजूद कोई मामला दर्ज नहीं हुआ।

7. एमएसपी पर कानूनी जामा? : केंद्र सरकार ने ''एमएसपी'' (न्यूनतम समर्थन मूल्य) को कानूनी अमला पहनाने और अन्य मुद्दों पर जुलाई 2022 में एक नई समिति बनाई, जिसकी रिपोर्ट अभी तक सार्वजनिक नहीं हुई है। किसान संगठनों से लेकर समस्त पक्ष सोए हुए हैं?

8. किसान आंदोलन के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय ने जनवरी 2021 में विवाद को हल करने एक चार सदस्यीय समिति गठित की थी। कमेटी की रिपोर्ट मार्च 21 को ही सुप्रीम कोर्ट को सौंप दिए जाने के बावजूद न तो रिपोर्ट सार्वजनिक हुई न ही उस पर कोई कार्रवाई हुई।

9. मौलाना साद! याद है आपको? 'तबलीगी जमात' के प्रमुख मौलाना मोहम्मद साद कांधलवी के विरुद्ध मार्च 2020 में 'निजामुद्दीन मरकज' में धार्मिक आयोजन कर हजारों लोगों की उपस्थिति से कोविड-19 लॉकडाउन नियमों के उल्लंघन और गैर-इरादतन हत्या के अपराध की प्राथमिकी दर्ज हुआ था। लेकिन इस मामले में साद की गिरफ्तारी तो दूर कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई।

10. उच्चतम न्यायालय अपने ही आदेशों का पालन करवाने में उदासीन प्रतीत हो रहा है। उसके अनेक फैसलों का पालन करवाना अधीनस्थ न्यायालय ही मानो भूल चुके हैं। जैसे कि असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर मजिस्ट्रेट की अनुमति बिना हथकड़ी न लगाने का निर्देश प्रेमशंकर शुक्ला वि. दिल्ली प्रशासन (1980). गिरफ्तार किए जाने के 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के विभिन्न निर्देशों का पालन करना, डी. के. बसु प्रेस वि. पश्चिम बंगाल (1997)। विशाखा बनाम राजस्थान राज्य (1997) में यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए सरकारी, निजी संस्थाओं में 'आंतरिक शिकायत समिति' का गठन। अफरोज मोहम्मद बनाम गुजराज राज्य (2019) में अपराध या पूछताछ की वीडियो रिकार्डिंग।

अभी अहमदाबाद में बहुत बड़ा विमान हादसा हुआ, जिसमें 275 लोग मृत्यु के ग्रास में चले गए। इसके बाद 'जल-जहाज'' की गोवा में हुई दुर्घटना में 23 लोगों की मृत्यु हो गई। फिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में हेलीकॉप्टर के क्रैश हो जाने पर उसमें सवार पायलट सहित सभी सात लोग काल के गाल में समा गए। महाराष्ट्र के पुणे में इंद्रायणी नदी पर लगभग मात्र 25 साल बना पुराना पुल जर्जर होकर गया, जिसमें 10 से 15 लोगों के मौत की आशंका है। जो इसके निर्माण की वैसे भी 'हर नया हादसा पिछले हादसे को भुला ही देता है।' आप प्रतिगामी तो हो नहीं सकते? इसलिए हमें हादसों को भूलना ही होगा, यदि हम आगे बढ़ना है तो? यदि हम इसी तरह भूलते रहे तो न सरकारें जवाबदेह होगी, न व्यवस्था सुधरेगी?

क्या दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी है?

ईरान- इजराइल युद्ध

आरबी त्रिपाठी
लेखक स्तंभकार हैं।

जंग कोई भी हो किसी के बीच हो वह सम्पूर्ण मानवता के विरूद्ध होती है। खतरा यदि परमाणु युद्ध छिड़ने का हो तो आज भी हिरोशिमा और नागासाकी की भीषण तबाही तथा बरसों नहीं भुलाये जाने वाले जख्मों को कोई कैसे भूल सकता है। युद्ध होने नहीं चाहिये या उन्हें तुरंत रोका जाने के लिये विश्व के नेताओं को हस्तक्षेप करना आवश्यक होता है। लेकिन आज विश्व में ऐसा नेतृत्व है जो जंग रुकवा सके? युद्ध की परिणति यानी तबाही और चारों ओर विध्वंस।

रविवार 22 जून को अलसुबह से खबरें सुनने देखने को मिली कि आखिर जिस बात की आशंका बलवती थी वही हुआ। विश्व का चौधरी समझा जाने वाला अमेरिका ईरान इजराइल युद्ध के दसवें दिन इसमें कूद ही पड़ा। अमेरिकी युद्धक विमानों ने ईरान के 3 प्रमुख परमाणु ठिकानों जिनमें फोर्डो और नतान शामिल है हमले किये। इस एक्शन को भी महज 180 सेकंड में अंजाम दिया। यूएस के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जहां इसे शानदार सफलता बताया वहीं ईरान के रक्षा मंत्री ने इसे यूएन चार्टर का उल्लंघन बताया। हर कीमत पर ईरान की संप्रभुता की रक्षा करने का विश्वास दिलाया। हमले के बाद पूरे ईरान में अलर्ट है और स्कूल कॉलेज बंद हैं। ईरान ने दावा किया है कि रेडिएशन लीक नहीं हुआ है। उधर इजराइल में भी अलर्ट जारी किया गया है।साथ ही हूती विद्रोहियों की इस चेतावनी की भी खबर आ रही है कि अमेरिका अपने शिप दूर रखें। विनाशकारी नतीजे होंगे।

यूएस के राष्ट्रपति ट्रंप के अचानक जी 7 शिखर सम्मेलन से लौट आने पर ही यह अटकलें लगाई जा रही थी कि वे कुछ बाड़ा कदम उठाने जा रहे हैं लेकिन उन्होंने दो सप्ताह के समय की बात कहकर इन पर विराम लगा दिया था। बाद में उनका यह बयान भी आया कि उन्हें पता है कि अयातुल्ला खोमनेई कहां पर हैं। ट्रंप ने तेहरान छोड़ने को भी लोगों से कहा था। युद्ध के दौरान ईरान के दर्जन भर कमांडरों के तथा परमाणु वैज्ञानिक के कथित तौर पर मारे जाने की ख़बरों से हड़कंप मचा हुआ था। तभी खोमनेई ने अपने तीन उत्तराधिकारियों की घोषणा भी आनन फानन में की।

इस युद्ध के असर से भारत भी अछूता कैसे रह सकता था सो ऑपरेशन सिंधु के तहत पहले 110 भारतीय छात्रों को आर्मेनिया के रास्ते विमान से दिल्ली लाया गया और अभी तक 1117 भारतीय छात्र और लोगों को वहां से सुरक्षित लाया जा चुका है। लौटने पर इन लोगों ने बताया कि ईरान में उनकी सांसें अटकी हुई थी। जबकि दूसरी ओर इजराइल में फंसे भारतीयों को एयर स्पेस नहीं मिलने से उनकी उड़ान रद्द होने का सामना करना पड़ा। इतना ही नहीं भारत ने नेपाल तथा श्रीलंका के छात्रों,लोगों की वापसी में मदद कर बड़े दिल का परिचय दिया।

अब आगे क्या-कुल मिलाकर लब्बोलुआब यह है कि ईरान को परमाणु हथियारों से रोकना तथा तेल पर अपना प्रभुत्व कायम करना। इस युद्ध में अब आगे कुछ भी हो सकता है। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार युद्ध में परमाणु हथियारों का इस्तेमाल यदि किया गया तो यह घातक सिद्ध होगा। कुछ जानकार इसे तीसरे विश्व युद्ध की आहट के रूप में देख रहे हैं। यदि ऐसा हुआ तो सम्पूर्ण मानवता के हित में नहीं होगा। जंग के परिणाम हमेशा विनाशकारी होते हैं, इसे दृष्टिगत रखकर युद्ध रोकने या सीजफायर की दिशा में कोशिशें तेज की जाना इस वक्त की जरूरत है। ईश्वर इसके लिये सभी संबंधित पक्षों को सद्बुद्धि प्रदान करें। अन्यथा बेकसूर लोग मारे जायेंगे और हास्पिटल तथा टेलीविजन केन्द्र सहित महत्वपूर्ण इन्फ्रास्ट्रक्चर इसी तरह नष्ट किये जाते रहेंगे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

राजेंद्र बज
लेखक व्यंग्यकार हैं

यदि मस्तीखोर मॉनिटर बन जाए....

खबर है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को अंतर्राष्ट्रीय नोबेल शांति पुरस्कार के लिए पाकिस्तान ने नामित करने का फैसला लिया है। इसे लेकर मुझे अपने विद्यार्थी जीवन का वह किस्सा याद आ गया जब हमारी कक्षा में सबसे ज्यादा उद्दंड छात्र को गुरुजी ने कूटनीति के आधार पर कक्षा का मॉनिटर बना दिया था। जबकि हम इतने अनुशासित थे कि गुरुजी की हर बात को पत्थर की लकीर समझा करते थे। तब हम समझ ही नहीं पाए थे कि गुरु जी की समझ में ऐसी कौन सी बात आई, जिसके चलते उन्होंने यह कदम उठाया। लेकिन विद्यार्थी जीवन के बाद जैसे-जैसे जमाने की समझ के साथ-साथ राजनीति की समझ भी आने लगी, मन ही मन गुरुजी का लोहा मान लिया।

हमने प्रत्यक्ष देखा कि यदि बंदर के हाथ में उस्तरा थमा दिया जाए, तो बाकी जीव जंतु भी खौफ से भर जाते हैं। यहां तक कि जंगल के राजा शेर को भी यह अंदेशा हो सकता है कि बंदर के हाथ में उस्तरा है, वह ठहरा बंदर, क्या ठिकाना उल्टा-सीधा उस्तरा चला कर कहीं कोई खरोच ही न मार दे ! भद्द पीट जाएंगी। गरज यह कि बंदर के हाथ में उस्तरा, चाहे पहली नजर में गलत निर्णय लगता हो, लेकिन इसका दूरगामी प्रभाव यह होता है कि हर कोई समझ सकता है कि जब उस्तरा बंदर के हाथ में है, और वह मस्तीखोर है, तो भला दूसरा मस्ती कैसे कर सकेगा ? मस्ती करने वाला मॉनिटर बनने पर अच्छी तरह जानता है कि और कौन, कहां, कैसे और कब मस्ती कर सकता है ?

अब देखिए न, हमारे यहां लोकतंत्र में कद्दावर, संघर्षशील, जुझारू और दबंग शख्सियत जनमत के बहुमत के आधार पर अंगद के पैर की भांति राजनीति में स्थापित हुआ करती है। वैसे भी आजकल जनता जनार्दन सीधे-साधे, भोले-भाले जनप्रतिनिधि की अपेक्षा तेजतर्राट जनप्रतिनिधि का होना, एक प्रकार से शासन-प्रशासन के जनहित में ढीले-ढाले रवैये की काट के रूप मे देखती और समझती है। छोटे से छोटे अधिकारी और छोटे से छोटे कर्मचारी भी दबंग जनप्रतिनिधि द्वारा लगाए गए फोन की घंटी आने पर वही करते हैं जैसा कि उन्हें करने के लिए कहा जाता है। जनता जनार्दन को भी यह विश्वास होता है कि भैया एक फोन ठोक देंगे तो सब ठीक हो जाएगा।

अब हर छोटे-बड़े चुनाव में ऐसे पोस्टर नहीं लगा करते कि ईमानदार, अनुशासित, सहृदय और सीधे-सच्चे फलाने-फलाने उम्मीदवार को अपना अमूल्य मत देकर भारी बहुमत से विजयी बनाएं। दरअसल जनता जनार्दन की नजरों में जनप्रतिनिधि भी ऐसा होना चाहिए जो केवल बातूनी ही न हो, बल्कि बात के साथ लात का भी उपयोग करता हो और जरूरत पड़ने पर दुलत्ती भी झाड़ सकता हो। अन्यथा उसे तो हर कोई घोलकर ही पी जाएगा। जरूरत पड़ने पर क्या तो वह सदन में कुर्सी उठाकर जोर-जोर से चिल्लाएगा और क्या ही अध्यक्ष की आसंदी तक पहुंचने की कोशिश कर सकेगा ! जब ऐसा नहीं कर सकेगा तो फिर उसकी हर एक आवाज राजनीति के नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह जाएगी।

न्याय और कानून

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

पूर्व में भी अनेक न्यायाधीश कदाचार के दोषी रहे

भारत के इतिहास में किसी न्यायाधीश पर महाभियोग चलाने का कभी कोई सफल प्रयास नहीं हुआ। अधिकांश दागी न्यायाधीशों ने संसद में कार्यवाही पूरी होने से पहले ही इस्तीफा देने का विकल्प चुना है। उनमें से कुछ को तो अपनी सेवानिवृत्ति या त्यागपत्र के बाद ही आपराधिक आरोपों का सामना करना पड़ा है। फ़िलहाल मामला यशवंत वर्मा को लेकर चर्चा में है। उनके यहां बड़ी मात्रा में नकदी पायी गई थी। जांच के बाद उन्होंने इस्तीफे से इंकार कर दिया और अब मामला महाभियोग की स्थिति में है।

8 मई को भारत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) संजीव खन्ना ने न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के लिए गठित तीन न्यायाधीशों की आंतरिक समिति के निष्कर्षों को भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री दोनों को भेज दिया। इस तरह की कार्रवाई राष्ट्रीय राजधानी में न्यायमूर्ति वर्मा के आधिकारिक आवास में लगी आग के दौरान कथित तौर पर बड़ी मात्रा में बेहिसाब नकदी मिलने के बाद न्यायाधीश द्वारा अपने पद से इस्तीफा देने से इनकार करने का संकेत है। अब गेंद केंद्र सरकार के पाले में है कि वह न्यायमूर्ति वर्मा के खिलाफ आगे की कार्रवाई करे। लेकिन, न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा का मामला पहला नहीं है। इसके पूर्व भी कई न्यायाधीशों को कदाचार का दोषी माना गया था।

इन-हाउस प्रक्रिया की उत्पत्ति सर्वोच्च न्यायालय के 1995 के सी रविचंद्रन अय्यर बनाम जस्टिस एएम भट्टाचार्जी के फैसले से हुई। तत्कालीन बॉम्बे हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भट्टाचार्जी को स्थानीय बार द्वारा इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया था। क्योंकि, उन पर आरोप था कि उन्होंने अपनी लिखी एक किताब के लिए विदेशी प्रकाशक से अनुपातहीन रॉयल्टी प्राप्त की। इसके बाद, सर्वोच्च न्यायालय के तीन जजों और हाई कोर्ट के दो वरिष्ठ मुख्य न्यायाधीशों की एक समिति ने इन-हाउस जांच के लिए औपचारिक प्रक्रिया निर्धारित की। इस पैनल ने 1997 में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की और दिसंबर 1999 में सर्वोच्च न्यायालय की पूर्ण अदालत ने इसे स्वीकार कर लिया। सन् 2014 में, सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि मुख्य न्यायाधीश के पास किसी मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के अनुसार इन-हाउस प्रक्रिया को ढालने का अधिकार होगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जांच प्रक्रिया पक्षपात, पूर्वाग्रह या पक्षपात के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करती है।

जब किसी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के विरुद्ध कोई गंभीर शिकायत की जाती है, तो उस न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को संबंधित न्यायाधीश से जवाब मांगना आवश्यक होता है। यदि उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि मामले की गहन जांच की आवश्यकता है, तो उन्हें अपनी टिप्पणी, शिकायत और न्यायाधीश के जवाब को मुख्य न्यायाधीश को भेजना आवश्यक होता है। इस पर विचार करने के पश्चात, यदि मुख्य न्यायाधीश भी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मामले की गहन जांच की आवश्यकता है, तो वे उच्च न्यायालयों के दो मुख्य न्यायाधीशों और एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की तीन सदस्यीय समिति गठित करते हैं। इसके पश्चात यह समिति आरोपों की तथ्यान्वेषण जांच करती है।

जब समिति को न्यायाधीश के खिलाफ गंभीर कदाचार के आरोपों में दम नजर आता है, तो भारत के मुख्य न्यायाधीश उन्हें पद से इस्तीफा देने या स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने की सलाह दे सकते हैं। हालांकि, अगर न्यायाधीश इस्तीफा देने से इनकार करते हैं, तो भारत के मुख्य न्यायाधीश को महाभियोग प्रक्रिया शुरू करने के लिए आरोपी और आंतरिक समिति के निष्कर्षों के बारे में भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को सूचित करना होगा। लोकसभा और राज्यसभा में महाभियोग की कार्यवाही के बिना किसी न्यायाधीश को हटाया नहीं जा सकता। भारत के संविधान के अनुच्छेद 124(4) में कहा गया कि राष्ट्रपति के आदेश के बिना सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को उसके पद से नहीं हटाया जा सकता।

राष्ट्रपति ऐसा तब कर सकते हैं जब संसद के प्रत्येक सदन में उपस्थित सदस्यों के कम से कम दो-तिहाई बहुमत से प्रस्ताव का समर्थन किया जाए। अनुच्छेद 218 इस खंड को उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर भी लागू करता है। विशेष रूप से, न्यायाधीश (जांच) अधिनियम, 1986 के तहत, किसी न्यायाधीश के खिलाफ वैध महाभियोग नोटिस प्राप्त करने पर, राज्यसभा के सभापति या लोकसभा के अध्यक्ष को आरोपों की जांच के लिए न्यायाधीशों और एक न्यायविद की एक समिति का गठन करना होता है।

धारा 3(9) में कहा गया है कि केंद्र सरकार, अध्यक्ष या सभापति या दोनों द्वारा, जैसा भी मामला हो, न्यायाधीश के खिलाफ मामले का संचालन करने के लिए एक वकील नियुक्त कर सकती है। इसके बाद इस समिति की रिपोर्ट को संसद में विचार के लिए रखा जाना आवश्यक है। अधिनियम की धारा 6(3) में कहा गया है कि यदि प्रस्ताव को संसद के प्रत्येक सदन द्वारा अनुच्छेद 124 के खंड (4) के प्रावधानों के अनुसार या, जैसा भी मामला हो, संविधान के अनुच्छेद 218 के साथ पठित उस खंड के अनुसार अपनाया जाता है, तो न्यायाधीश का दुर्व्यवहार या अक्षमता साबित मानी जाएगी और न्यायाधीश को हटाने के लिए प्रार्थना करने वाला एक संबोधन संसद के प्रत्येक सदन द्वारा उसी सत्र में राष्ट्रपति को निर्धारित तरीके से प्रस्तुत किया जाएगा जिसमें प्रस्ताव अपनाया गया है।

न्यायमूर्ति शमित मुखर्जी, न्यायमूर्ति एसएन शुक्ला और न्यायमूर्ति आईएम कुद्दुसी के खिलाफ मामले अभी भी लंबित हैं। कम से कम चार ऐसे मामले हैं जिनमें न्यायाधीशों को या तो इन-हाउस कमेटी की जांच का सामना या महाभियोग की कार्यवाही का सामना करना पड़ा। न्यायमूर्ति वीरास्वामी रामास्वामी 1989 से 1994 के बीच सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। इससे पहले, उन्होंने पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया। सन् 1991 में, वे वित्तीय अनियमितताओं के लिए महाभियोग की कार्यवाही का सामना करने वाले पहले शीर्ष न्यायालय के न्यायाधीश बने। 9वीं लोकसभा के 108 सदस्यों द्वारा उनके खिलाफ प्रस्ताव पेश किया गया था। आरोप लगाया गया कि उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, उनके आवास और उच्च न्यायालय के लिए लगभग पचास लाख की लागत के कालीन और फर्नीचर को सार्वजनिक धन से चुनिंदा डीलरों से अत्यधिक बढ़ी हुई कीमतों पर खरीदा गया था। न्यायमूर्ति पीबी सावंत समिति ने 1992 में न्यायमूर्ति रामास्वामी को कुछ आरोपों में दोषी पाया था। हालांकि, न्यायाधीश को हटाने के प्रस्ताव को 1993 में अपेक्षित बहुमत नहीं मिला। वे एक साल बाद शीर्ष अदालत के न्यायाधीश के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति नारायण शुक्ला केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दायर दो मामलों का सामना कर रहे हैं। जुलाई 2018 में, तीन न्यायाधीशों की इन-हाउस समिति ने मेडिकल कॉलेज प्रवेश घोटाले में उनकी संलिप्तता के लिए उन्हें हटाने की सिफारिश की थी। तत्कालीन सीजेआई रंजन गोगोई द्वारा महाभियोग की सिफारिश किए जाने के बाद जस्टिस शुक्ला छुट्टी पर चले गए थे। 2019 में, सीजेआई ने सीबीआई को जस्टिस शुक्ला की जांच करने की अनुमति दी। प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) में आरोप लगाया गया है कि जस्टिस शुक्ला ने प्रसाद एजुकेशन ट्रस्ट (पीईटी) से रिश्वत ली, जो एक मेडिकल कॉलेज चलाता था, उनके पक्ष में आदेश पारित करने के लिए।

न्यायमूर्ति दिनाकरन ने 2011 में उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पद से इस्तीफा दे दिया था। इससे पहले वे कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे। सन् 2009 में उन्हें सर्वोच्च न्यायालय में पदोन्नत करने की सिफारिश की गई थी। लेकिन प्रस्ताव के मूर्त रूप लेने से पहले ही उन पर तमिलनाडु में भ्रष्टाचार और भूमि हड़पने के गंभीर आरोप लगे। दिसंबर 2009 में राज्यसभा के 75 सदस्यों ने उन्हें हटाने की मांग की और न्यायाधीशों की जांच समिति गठित की गई। जांच लंबित रहने के दौरान न्यायमूर्ति दिनाकरन ने इस्तीफा दे दिया।

नतीजतन, उन्हें हटाने की कार्यवाही निष्फल हो गई। सन् 2011 में, न्यायमूर्ति सौमित्र सेन, जो उस समय कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे, राज्यसभा में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को हटाने के लिए पहले प्रस्ताव का विषय बने। यह भारतीय संसद में एकमात्र दूसरा मामला था। न्यायमूर्ति रामास्वामी ने 1991 में लोकसभा में इसी तरह की कार्यवाही का सामना किया था। हालांकि, तत्कालीन सीजेआई केजी बालाकृष्णन ने सौमित्र सेन के खिलाफ आरोपों की जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति गठित की थी। 2008 में समिति ने उन्हें कदाचार का दोषी पाया और उन्हें हटाने की सिफारिश की। 2009 में, 58 राज्यसभा सदस्यों ने न्यायमूर्ति सेन को बेंच से हटाने की मांग की। राज्यसभा ने भी एक जांच पैनल गठित किया जिसने उन्हें दोषी पाया। महाभियोग प्रस्ताव राज्यसभा में पारित हुआ। हालांकि, लोकसभा में महाभियोग प्रस्ताव से पहले न्यायमूर्ति सेन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। लेकिन हाल ही में न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा ने दिल्ली स्थित उनके सरकारी आवास पर नकदी पाए जाने के आरोपों की जांच करने वाली आंतरिक समिति द्वारा उन पर अभियोग लगाए जाने के बाद भी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद से इस्तीफा देने से इनकार कर दिया है।

अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आधुनिक ओलम्पिक खेलों के 129 वर्ष

अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक दिवस मनाए जाने की शुरूआत 23 जून 1948 को हुई थी। दरअसल आधुनिक ओलम्पिक खेलों का पहला आयोजन तो वर्ष 1896 में हुआ था लेकिन अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति (आईओसी) की स्थापना पियरे द कुबर्तिन द्वारा 23 जून 1894 को की गई थी, जिसके प्रथम अध्यक्ष बने थे यूनानी व्यापारी डेमट्रियोस विकेलास। आईओसी का मुख्यालय स्विट्जरलैण्ड के लॉजेन में स्थित है और वर्तमान में दुनियाभर में 205 राष्ट्रीय ओलम्पिक समितियां इसकी सदस्य हैं। आईओसी का स्थापना दिवस 23 जून को ही बाद में अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति द्वारा प्रतिवर्ष ओलम्पिक दिवस के रूप में मनाया जाना शुरू किया गया। आईओसी द्वारा प्रत्येक चार वर्ष के अंतराल पर ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेल, शीतकालीन ओलम्पिक खेल और युवा ओलम्पिक खेल का आयोजन किया जाता है। पहला ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक वर्ष 1896 में यूनान के एथेंस में तथा पहला शीतकालीन ओलम्पिक 1924 में फ्रांस के चेमोनिक्स में आयोजित किया गया था। ओलम्पिक दुनिया की सबसे बड़ी खेल प्रतियोगिता है, जिसमें दो सौ से ज्यादा देश हिस्सा लेते हैं।

भारत आधुनिक ओलम्पिक खेलों में 105 वर्ष का सफर पूरा कर रहा है। भारत ने पहली बार वर्ष 1900 में ओलम्पिक में हिस्सा लिया था। तब भारत की ओर से केवल एक एथलीट नॉर्मन प्रिचर्ड को भेजा गया था, जिसने एथलेटिक्स में दो रजत पदक जीते थे। हालांकि भारत ने अधिकारिक तौर पर पहली बार 1920 में ओलम्पिक खेलों में हिस्सा लिया था। 2024 में पेरिस ओलम्पिक में भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 6 पदक भारत की झोली में डाले थे जबकि उससे पहले 2021 में टोक्यो ओलम्पिक में भारत 7 पदक जीतने में सफल हुआ था। ओलम्पिक खेलों की शुरूआत करीब 2798 वर्ष पूर्व ग्रीस में जीयस के पुत्र हेराकल्स द्वारा की गई मानी जाती है किन्तु ऐसी धारणा है कि यह खेल उससे भी काफी पहले से ही खेले जाते रहे थे। 776 ईसा पूर्व विधिवत रूप से शुरू हुए ओलम्पिक खेलों का सिलसिला उसके बाद निर्बाध रूप से 393 ई. तक अर्थात् 1169 वर्षों तक चलता रहा। इन खेलों के माध्यम से ऐसा प्रदर्शन किया जाता था, जो मानव की शक्ति, गति एवं ऊर्जा का परिचायक माना जाता था। प्राचीन ओलम्पिक खेलों का आयोजन ईश्वर को श्रद्धांजलि देने के लिए किया जाता था।

अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक दिवस मनाए जाने की शुरूआत 23 जून 1948 को हुई थी। दरअसल आधुनिक ओलम्पिक खेलों का पहला आयोजन तो वर्ष 1896 में हुआ था लेकिन अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति (आईओसी) की स्थापना पियरे द कुबर्तिन द्वारा 23 जून 1894 को की गई थी, जिसके प्रथम अध्यक्ष बने थे यूनानी व्यापारी डेमट्रियोस विकेलास। आईओसी का मुख्यालय स्विट्जरलैण्ड के लॉजेन में स्थित है और वर्तमान में दुनियाभर में 205 राष्ट्रीय ओलम्पिक समितियां इसकी सदस्य हैं। आईओसी के स्थापना दिवस 23 जून को ही बाद में अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति द्वारा प्रतिवर्ष ओलम्पिक दिवस के रूप में मनाया जाना शुरू किया गया। आईओसी द्वारा प्रत्येक चार वर्ष के अंतराल पर ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेल, शीतकालीन ओलम्पिक खेल और युवा ओलम्पिक खेल का आयोजन किया जाता है। पहला ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक वर्ष 1896 में यूनान के एथेंस में तथा पहला शीतकालीन ओलम्पिक 1924 में फ्रांस के चेमोनिक्स में आयोजित किया गया था। ओलम्पिक दुनिया की सबसे बड़ी खेल प्रतियोगिता है, जिसमें दो सौ से ज्यादा देश हिस्सा लेते हैं।

फ्रांस के युवा शिक्षाशास्त्री पियरे द कुबर्तिन ने आधुनिक ओलम्पिक खेलों की आधारशिला रखी थी और उनके द्वारा 23 जून 1894 को अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति की स्थापना को जन्मे पियरे द कुबर्तिन की उम्र उस वक्त सिर्फ सात साल थी, जब 1870 में फ्रैंच-परसियन लड़ाई में जर्मनी ने फ्रांस पर कब्जा कर लिया था। माना जाता है कि उस हार के कुछ खेलों का आयोजन शुरू हुआ। उसके बाद ओलम्पिक खेल प्राचीन ओलम्पिक खेलों की ही भांति हर चार वर्ष के अंतराल पर आयोजित किए जाने लगे। एक जनवरी 1863 किए जाने के बाद नए रूप में 1896 से आधुनिक ओलम्पिक वर्षों बाद कुबर्तिन इसका विश्लेषण करने पर इस नतीजे पर पहुंचे कि फ्रांस की हार का कारण उसकी सैन्य कमजोरियां नहीं बल्कि फ्रांसीसी सैनिकों में ताकत की कमी थी। जर्मन, ब्रिटिश और अमेरिकन बच्चों की शिक्षा का अध्ययन करने के बाद कुबर्तिन ने पाया कि उन्हें ताकतवर और हर क्षेत्र में अग्रणी बनाने में खेलों में उनकी भागीदारी की सबसे प्रमुख भूमिका थी जबकि फ्रांसीसी खेलों में भागीदारी के मामले में काफी पिछड़े थे। उसके बाद कुबर्तिन ने कोशिशें की कि फ्रांसीसियों को किसी भी तरह खेलों के प्रति आकर्षित किया जाए लेकिन उन्हें इन प्रयासों में उसाहजनक सफलता नहीं मिली किन्तु कुबर्तिन अपने इरादों पर दृढ़ थे।

1890 में कुबर्तिन ने 'यूनियन डेस सोसायटीज फ्रांसीसीज द स्पोर्ट्स एथलेटिक्स' नामक एक खेल संगठन की नींव रखी और उसके दो वर्ष बाद कुबर्तिन के दिमाग में ओलम्पिक खेलों को पुनर्जीवन देने का विचार आया। खेल संगठन की 25 नवम्बर 1892 को पेरिस में हुई एक मीटिंग में उन्होंने इस संबंध में अपने विचार भी रखे किन्तु उनके उस भाषण से कुछ हासिल नहीं हुआ। उसके दो वर्ष बाद कुबर्तिन ने 9 देशों के कुल 79 डेलीगेट्स की एक मीटिंग आयोजित की। इस मीटिंग में कुबर्तिन ने पूरे उत्साह से ओलम्पिक खेलों की नए सिरे से पुनः शुरूआत करने संबंधी भाषण दिया और इस बार वह लोगों को अपने विचारों से प्रभावित करने में सफल हुए। कांफ्रैंस में सभी डेलीगेट्स ने एकमत से ओलम्पिक खेल कराए जाने के पक्ष में वोट दिया और तय किया गया कि कुबर्तिन इन खेलों के आयोजन के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय समिति का गठन करें। उसके बाद 'अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति' का गठन हुआ, जिसके प्रथम अध्यक्ष के रूप में ग्रीस के डेमट्रियोस विकेलास का चयन हुआ। प्रथम ओलम्पिक खेलों के आयोजन के लिए एथेंस को चुना गया और इसकी तैयारियां शुरू हुई। 5 अप्रैल 1896 को प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों की शुरूआत हुई। प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों का उद्घाटन 5 अप्रैल 1896 को एथेंस (यूनान) में किंग जॉर्ज पंचम द्वारा किया गया। अमेरिका के जेम्स बी. कोनोली को पहले आधुनिक ओलम्पिक खेल में प्रथम ओलम्पिक चैम्पियन बनने का गौरव हासिल है। पहले ओलम्पिक खेल की प्रतियोगिताओं में महिलाओं के भाग लेने पर प्रतिबंध था किन्तु सन् 1900 में दूसरे ओलम्पिक में महिलाओं को भी ओलम्पिक खेलों के जरिये अपनी प्रतिभा का परिचय देने का अवसर मिल गया। प्रथम आधुनिक ओलम्पिक में भाग लेने वाले कुछ खिलाड़ी तो ऐसे भी थे, जो उस वक्त एथेंस में ही पर्यटक के तौर पर पहुंचे हुए थे। 1896 से ओलम्पिक खेलों का आयोजन नियमित होता रहा है लेकिन प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध के कारण 1916, 1940 तथा 1944 के ओलम्पिक आयोजन रद्द करने पड़े थे। यूनान (ग्रीस), ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड, आस्ट्रेलिया तथा फ्रांस ही पांच ऐसे देश हैं, जिन्होंने अब तक हर ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेलों में हिस्सा लिया है।

ओलम्पिक खेलों के उद्घाटन के समय स्टेडियम में सबसे पहले ग्रीस की टीम प्रवेश करती है। उसके बाद मेजबान देश की भाषानुसार वर्णमाला के क्रम से एक-एक करके दूसरे देशों की टीमें स्टेडियम में प्रवेश करती हैं जबकि मेजबान देश की टीम सबके बाद स्टेडियम में पहुंचती है।

पुस्तक समीक्षा

उद्यांश कुमार पाण्डेय

समीक्षक

जादूगरनी- प्रेम, पीड़ा, जीवन और दर्शन का इंद्रधनुष

'जादूगरनी' एक ऐसा काव्य संग्रह है, जिसे पढ़ते हुए पाठक यह भूल जाता है कि वह केवल कविता पढ़ रहा है और वह जैसे श्रृंगार की कृतियों की रचनाबद्धता का एक ग्रंथ हो। सुदर्शन व्यास ने इस संग्रह में प्रेम की यात्रा को नवजात के प्रथम स्पर्श से लेकर एक परिपक्व विवाहित पुरुष की अनुभूतियों तक बड़े ही आत्मीय और सौंदर्यबोध से पिरोया है।

इस संग्रह में संबंधों की बारीकियों को जिस प्रकार संवेदनशीलता से चित्रित किया गया है, वह प्रशंसनीय है। नवजात शिशु की कोमल वाणी से लेकर युवा प्रेमी-प्रेमिकाओं की कामनाओं, वियोग, सहयोग, और श्रृंगार की अभिव्यक्ति तक जीवन के विविध पहलुओं को समेटते हुए यह संग्रह न केवल प्रेम का दस्तावेज़ है, अपितु जीवन-दर्शन, संख्या मीमांसा, और सांस्कृतिक मूल्यों की परतें भी खोलता है।

कई बार पढ़ते हुए यह आभास होता है कि जैसे 'कामायनी' का कोई आधुनिक संस्करण सामने हो। 'जीवन', 'उम्मीद', 'दर्पण', 'दुख' जैसी कविताएं कवित्व के उस स्तर को छूती हैं जहां कवि के लिए मात्र कहना ही नहीं, अनकहे को भी प्रकट करना चुनौती होता है। 'सुनो ना पापा' जैसी रचना एक पिता के हृदय को विचलित करती है, वहीं 'सुनो श्रीपद' में भावनाओं का प्रवाह कवि की आत्मा से पाठक तक निर्बाध बहता है।

रिश्तों की गहराइयों को 'मुंहबोली बुआ' और 'मौसम और हम' जैसी कविताएं न केवल चित्रित करती हैं, बल्कि उनमें समर्पण, स्वार्थ, विश्वासघात और स्नेह का ऐसा मिश्रण मिलता है जो अनुभव की परिपक्वता को दर्शाता है।

युवाओं के प्रेम की कोमलता और जटिलता को 'जादूगरनी', 'बेचारे लड़के', और 'प्रेम भरी नफरत' में अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इनमें श्रृंगार और वियोग का संयोजन पाठक को झकझोर देता है। वहीं, 'मृत्यु और मोक्ष' और 'वैराग्य की तृष्णा' जैसी रचनाएं प्रेम के माध्यम से जीवन के अंतिम सत्य की ओर उन्मुख करती हैं, जो किसी आध्यात्मिक प्रवचन सा अनुभव देती हैं।

'क्या अपेक्षा करें' में नारी विमर्श का जो स्वर मुखर होता है, वह जयशंकर प्रसाद के नारी-दृष्टिकोण की गूंज-सा प्रतीत होता है। 'धरोहर' और 'बुदबुदा सा भ्रम' में ग्रामीण संस्कृति के रंग हैं, जो वियोग और श्रृंगार की परंपरा को नवीन संदर्भ देते हैं। 'असभ्य प्रेम' और 'अंतहीन पीड़ा' जैसी कविताएं रक्तरंजित

आंसुओं से लिखी प्रतीत होती हैं, जिनमें प्रेम का गहन वेदना और प्रतिष्ठा के संघर्ष की झलक मिलती है।

'चिंतन' और 'टीस' जैसे लघु किंतु प्रभावी शीर्षक हृदय को भेदते हैं। 'प्रेम करने का अर्थ' प्रेम के जुड़ने और बिछड़ने की गाथा है, जो संवाद के माध्यम से कवित्व की सृष्टि करती है। 'बिखराव' और 'मौन प्रेम' जैसे शीर्षक प्रेम की यात्रा का आरंभ और अंत दोनों प्रदर्शित करते हैं, जबकि 'खगोलीय घटना' में विज्ञान और प्रेम का विलक्षण संयोजन देखा जा सकता है।

'नाकामी', 'रूठना' और 'उम्मीद' प्रेम की स्वाभाविक अवस्थाएं हैं, जो हर प्रेम करने वाले को जीवन के किसी मोड़ पर अवश्य छूती हैं। 'फैसले की तकलीफ' और 'प्रेम के अधिकार' में प्रेम की पीड़ा और उसकी स्वीकृति का दर्शन गूढ़ स्वर में उपस्थित होता है।

'अद्वैतवाद' में मां और प्रेमिका के संबंध की तुलना जिस भावुकता और कल्पना से की गई है, वह अद्वितीय है। 'आस' और 'घुलन' को पढ़ते हुए लगता है मानो प्रेम स्वयं को विसर्जित कर एकाकार हो रहा हो। रचनाकार की संवेदनशीलता और उत्सव धर्मिता इन कविताओं में मुखर हो उठती है।

'नफरत' और 'फैसला' जैसे शीर्षकों में प्रेम की वह अवस्था प्रत्यक्ष होती है जब प्रेम, घृणा में परिवर्तित हो जाता है। यह वे कविताएं हैं जिन्हें पढ़ते हुए पाठक की आत्मा कांप उठती है। 'जिम्मेदार लड़के' और 'बेचारे लड़के' पुरुष-वेदना के स्वर हैं, जो रूढ़ियों और सामाजिक अपेक्षाओं के विरोध में मुखर होते हैं।

'साक्षात्कार', 'मुश्किल होता है', और 'सौदागर' जैसी रचनाएं युवा मन के संघर्ष को दफ्तरों और समाज के कठोर यथार्थ में प्रस्तुत करती हैं। 'सुहाने सपनों' और 'रुदन' में उत्सव और पीड़ा की द्वंद्वात्मक स्थिति दर्शायी गई है, वहीं 'जीवन' पाठक को प्रेरित करता है कि वे वेदना से उबरकर खंडहरों में भी इतिहास ढूंढें और आशा के स्वर में जागें।

'रंग वक्त के', 'उच्चाटन', और 'दर्पण' वे रचनाएं हैं जो अतीत की पीड़ा को वर्तमान की सच्चाई में रूपांतरित करती हैं। 'रिश्तों' और 'मुझे जैसे लोग' में सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक आदर्श की प्रेरणा मिलती है।

'बहुत दर्द होता है' और 'ओए वेणु' जैसी कविताएं पिता की उन भावनाओं को स्वर देती हैं जो प्रकट नहीं होतीं, पर गहराई से अनुभूत की जा सकती हैं।

यह संपूर्ण संग्रह केवल कविताओं का समूह नहीं है, यह भावनाओं की वह नदी है जिसमें डूबने पर पाठक स्वयं को नवीन अर्थों और अनुभूतियों से भर लेता है। सुदर्शन व्यास की काव्य चेतना, उनकी आत्मीयता, और वैचारिक गहराई इस संग्रह को विशेष बनाते हैं। यह पुस्तक प्रेम, पीड़ा, जीवन और दर्शन के हर रंग को समेटे हुए एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करती है।

पुस्तक - जादूगरनी (काव्य संग्रह)
लेखक - सुदर्शन व्यास
प्रकाशन- वेरा प्रकाशन, जयपुर
कीमत- 175

अतिक्रमण की जद में शहर के अधिकांश नदी-नाले

लोगों ने नदी-नालों पर पिल्लर और दीवार खड़ी कर किया निर्माण

संजय द्विवेदी, बैतूल।

शहर के अधिकांश नदी-नाले अतिक्रमण की जद में है। यहां तक की अतिक्रमणकारियों ने नाले के ऊपर तक अतिक्रमण कर पक्का निर्माण कर लिया है। किसी ने बीम से पिल्लर निर्माण कर खड़ा कर दिया, तो किसी ने दीवार डालकर निर्माण कर रखा है। इसे हटाने के लिए नगरपालिका ने अभी तक कोई ठोस कार्यवाही नहीं की है। जिससे भविष्य में बाढ़ जैसे हालात निर्मित होने की संभावना बनी रहेगी। गौरतलब है कि बैतूल शहर की सीमा रेखा से होकर माचना नदी गुजरती है, वहीं बैतूल शहर के बीचों बीच से 5 किलोमीटर लंबा हाथी नाला है। लेकिन इन स्थानों पर नियम ताक पर रखे गए हैं। यहां नदी और नालों पर बीम और दीवारें खड़ी हैं। कुछ लोगों ने नदी और नदी से एक मीटर भी जगह नहीं छोड़ी और नालों और नदियों के पानी में ही कंस्ट्रक्शन कर दिए हैं। ऐसे में भविष्य में यह निर्माण किसी हादसे को न्यौता दे सकते है। अधिकांश मकान अतिक्रमण कर और गलत तरीके से बनाए गए हैं, लेकिन नगरपालिका और राजस्व अमले, दोनों को इस बात की कोई फिक्र नहीं है कि इन्हें रोका जाए।

हाथी नाले में पिलर्स और दीवारें खड़ी कर निर्माण

शहर के सदियों पुराने हाथी नाला का जब हरिभूमि की टीम ने मुआयना किया, तो खंजनपुर, विकास नगर, गंज, सदर और

भग्गूढाना क्षेत्र में तो नाले के बिल्कुल किनारे तक और कहीं-कहीं नाले के ऊपर भी अतिक्रमण पाया गया, इसी तरह लिटिल फ्लावर स्कूल के पीछे से होकर गेंदा चौक होकर माचना नदी में मिलने वाले नाले पर भी गेंदा चौक के पास पटेल वार्ड में मकान, नाले के ऊपर बने दिखे। अन्य जगहों पर भी अधिकांश मकानों का कंस्ट्रक्शन नालों के किनारे तक या उसके ऊपर में ही है। खंजनपुर में लोहा पुल के समीप अधिकांश मकानों के पिलर्स और दीवारें नाले में हैं। इसी तरह विनोबा नगर और भग्गूढाना में भी कई पिलर्स नालों में ही बने हैं। विकास नगर में भी पटवारी कॉलोनी में नालों में ही मकानों के पिलर्स और दीवारें खडी हैं। कई जगह तो नाला बेहद संकरा हो गया है। जयप्रकाश वार्ड में भी कई लोगों ने नाले तक अपने मकान बना लिये है। ऐसे में बारिश के समय बाढ़ की स्थिति निर्मित होती है तो भविष्य में बड़े हादसे से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।

कर्बला घाट तक सबसे ज्यादा अतिक्रमण.....

शहर के हमलापुर से शुरू होकर कर्बला घाट तक लगभग पांच किलोमीटर बहने वाली माचना नदी के किनारों पर सबसे ज्यादा कंस्ट्रक्शन जयप्रकाश वार्ड में अचलपुर नाका क्षेत्र में नदी के किनारे किया गया है। माचना नदी के किनारे जयप्रकाश वार्ड में सबसे ज्यादा अतिक्रमण है। यहां पर कई मकान नदी के बिल्कुल किनारे तक बना दिए गए हैं। यहां कई लोग खतरा उठाकर भी रह रहे है। रामनगर में भी नदी के पानी से बचने के लिए मकान को पिलर्स के सहारे खड़ा किया गया है। लोग नदी और नालों के किनारे पर मकान धड़ाधड़ बनाते जा रहे हैं। लेकिन संबंधित विभाग द्वारा कोई कार्यवाही तक नहीं की जा रही है। जिसके चलते शहर के नदी-नाले लगातार अतिक्रमण की जद में आते जा रहे है और भविष्य में हादसों को न्योता दे रहे प्रतीत होते है।

नियमों का नहीं किया जा रहा पालन.....

टाउन एंड कंट्री प्लानिंग के अनुसार और बैतूल विकास योजना के नियमों के अनुसार किसी भी तरह के निर्माण कार्य नदी के उच्चतम जलस्तर से न्यूनतम दूरी 30 मीटर और नालों के उच्चतम जलस्तर से 9 मीटर दूरी होनी चाहिए। लेकिन शहर में इन नियमों को धता बताते हुए कतई पालन नहीं किया जा रहा है। इसके पीछे राजस्व विभाग और नगर पालिका के कर्ताधर्ताओं की लापरवाही भी जिम्मेदार है। विभाग समय रहते इस ओर ध्यान नहीं देते है। जिससे लोग बेधड? होकर नदी-नालों पर लगातार अतिक्रमण करते जा रहे है। हालात यह है कि शहर के अधिकांश नालों की चौड़ाई अतिक्रमण के कारण घटकर कम हो गई है। इस तरह नदी-नालों पर बने मकान बाढ़ का कारण तो बनते ही हैं, साथ ही साथ इन मकानों में रहने वाले लोग पर्यावरण के साथ खुद की जान भी जोखिम में डालकर रहते हैं।

इनका कहना है -

हमारे द्वारा कलेक्टर एवं तहसीलदार साहब को नदी-नालों के किनारे सीमांकन के लिए रेगुलरी आवेदन दिया जाता है। इसके अलावा जिन लोगों के द्वारा नदी-नालों पर अतिक्रमण किया है, उन्हें सख्ती से नोटिस जारी किया जायेगा। और रही बात गेंदा चौक के पास अतिक्रमण की, तो वहां पर पहले पत्थर की बड़ी पुलिया थी, जिस पर बाद में पीडब्ल्यूडी द्वारा पाइप की छोटी पुलिया बना दी गई। जिससे नाला सकरा हो गया, पहले वहां पर नाला लगभग 40 फीट चौड़ा था।

- श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर, नपाध्यक्ष बैतूल

(2) चूंकि जमीन का एक्रुअल रिकॉर्ड और डाटा राजस्व विभाग के पास रहता है, इसलिए उनके साथ संयुक्त टीम बनाकर समय-समय पर नोटिस देकर अतिक्रमण हटाया जाता है। हमारे द्वारा ऐसे अतिक्रमणकारियों को बिल्डिंग निर्माण की अनुमति भी नहीं दी जाती है।

- नीरज धुर्वे, इंजीनियर नगर पालिका बैतूल

माचना नदी चौड़ीकरण और सफाई कार्य का निरीक्षण करने पहुंचे विधायक

एनीकेट से गंगूडोह डैम तक सीमांकन के दिए निर्देश

माचना नदी की हो रही सफाई

बैतूल। नगर पालिका परिषद बैतूल द्वारा विवेकानंद वार्ड स्थित माचना नदी पर बने एनीकेट में जमा गाद की सफाई, नदी के चौड़ीकरण एवं सौंदर्यीकरण का कार्य प्रारंभ किया गया है। रविवार को इस कार्य का निरीक्षण करने बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल स्वयं माचना घाट पहुंचे।

निरीक्षण के दौरान विधायक के साथ नगर पालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, मुख्य नगर पालिका अधिकारी सतीश मटसेनिया, वार्ड पार्षद अंजू शर्मा, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष आनंद प्रजापति, भाजपा मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा और बड़ी संख्या में वार्डवासी उपस्थित रहे।

निरीक्षण के दौरान विधायक हेमंत खंडेलवाल ने मुख्य नगर पालिका अधिकारी एवं उपयंत्री को निर्देश दिए कि माचना नदी पर बने एनीकेट से लेकर गंगूडोह डैम तक की लगभग 1.50 किलोमीटर लंबाई में नदी का सीमांकन कराया जाए ताकि भविष्य में अतिक्रमण न हो सके और नदी की संरचना सुरक्षित रह सके।

विधायक ने नगर पालिका को यह भी निर्देशित किया कि एनीकेट में जल संग्रहण क्षमता बढ़ाने हेतु डब्ल्यूआरडीए (जल संसाधन विभाग) से तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त कर कार्य योजना बनाई जाए। उन्होंने कहा कि यदि माचना नदी की सफाई और चौड़ीकरण कार्य समय पर पूरा होता है तो एनीकेट में पानी की स्टोरेज क्षमता वर्तमान से दोगुनी हो सकती है, जिससे नगरवासियों को गर्मी के मौसम में जल संकट से राहत मिलेगी। इस अवसर पर स्थानीय नागरिकों ने भी नदी की सफाई और विस्तारीकरण को लेकर विधायक से चर्चा की और कार्य की गुणवत्ता बनाए रखने की अपील की। निरीक्षण के दौरान सफाई कार्य में लगे श्रमिकों की भी हौसला अफजाई की गई।

भारत स्वाभिमान न्यास एवं पतंजलि योग समिति के योग शिविर का समापन

प्रशिक्षकों को प्रमाण पत्र देकर किया सम्मान

बैतूल। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में भारत स्वाभिमान न्यास एवं पतंजलि योग समिति द्वारा आयोजित तीन दिवसीय योग प्रोटोकॉल प्रशिक्षण शिविर शनिवार 21 जून को संपन्न हो गया। शिविर के अंतिम दिन आयोजन समिति पतंजलि की ओर से विधायक हेमंत खंडेलवाल द्वारा प्रशिक्षित योग शिक्षकों को प्रमाण पत्र एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार, नपाध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, पूर्व नपाध्यक्ष आनंद प्रजापति, समाजसेवी सुनील द्विवेदी आदि उपस्थित थे। यह शिविर विवेकानंद वार्ड स्थित माचना नदी विसर्जन घाट के पास, फिल्टर प्लांट के पीछे 19 से 21 जून तक आयोजित किया गया था। जिसमें प्रतिदिन सुबह बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया और योग के विभिन्न आसनों, प्राणायाम एवं ध्यान की विधियों का अभ्यास किया। शिविर में पतंजलि के प्रशिक्षक हितेश पटेल, शिखा बारस्कर, बिमल दुबे, विनोद परिहार एवं संतोष तोमर द्वारा योग प्रोटोकॉल का अभ्यास कराया गया। इन प्रशिक्षकों ने प्रतिभागियों को नियमित योगाभ्यास के लाभ, मानसिक और आत्मिक शुद्धता तथा आयुर्वेद के माध्यम से रोगों से बचाव की जानकारी दी। शिविर के समापन अवसर पर भारत स्वाभिमान न्यास के जिला प्रभारी सुनील कुबड़े ने इन प्रशिक्षकों को प्रमाण पत्र एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि योग शारीरिक, मानसिक संतुलन के लिए आवश्यक है, और इन प्रशिक्षकों ने समाज में योग के प्रचार-प्रसार में सराहनीय भूमिका निभाई है। शिविर के अंतिम दिन बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए नियमित योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाने का संकल्प लिया।

जिला अमेच्योर वॉलीबाल संघ की नई कार्यकारिणी घोषित, गौरव सिंह किलेदार बने अध्यक्ष

वरिष्ठ खिलाड़ियों की मौजूदगी में हुई विशेष बैठक

बैतूल। ग्राम भोगीतेड़ा में जिला अमेच्योर वॉलीबाल संघ की पूर्वनिर्धारित सामान्य सभा का आयोजन किया गया। इस सभा की अध्यक्षता जिला पंचायत सदस्य राजा ठाकुर ने की। बैठक में नारायण सरले, अरुण सिंह किलेदार, सुबोध अवस्थी, राजेन्द्र सिंह किलेदार, अर्जुन सिंह ठाकुर एवं महेश चन्द्र अर्थ की विशेष उपस्थिति रही। इसके अलावा बैतूल जिले के आमंत्रित समस्त क्लब, गांव और शहर के संचालक, वरिष्ठ खिलाड़ी, निर्णायक एवं वॉलीबॉल खिलाडयिों की उपस्थिति में बैठक संपन्न हुई। सभा के दौरान बैतूल जिला अमेच्योर वॉलीबॉल संघ की नवीन कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। सर्वसम्मति से अध्यक्ष गौरव सिंह किलेदार, उपाध्यक्ष मलुकचंद पवार, महासचिव प्रशांत सिंह ठाकुर, संयुक्त सचिव मनोज कुमार रहड़वे, कोषाध्यक्ष शिवनाथ यादव, सदस्य रविशंकर गाडगे, सदस्य राहुल पटने, आनंद गिरी को मनोनीत किया गया। सभा का समापन उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ, जहां सभी खिलाडयिों व पदाधिकारियों ने बैतूल में वॉलीबॉल खेल को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का संकल्प लिया। वॉलीबॉल कोच इन्द्रसेन सिंह ठाकुर को इस निर्वाचन प्रक्रिया का परिवेक्षक नियुक्त किया गया था, जिनकी निगरानी में बैतूल जिला अमेच्योर वॉलीबॉल संघ की नई कार्यकारिणी का गठन हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि नारायण सरले ने घोषणा की कि भविष्य में बैतूल में वॉलीबॉल प्रतियोगिता आयोजित होने पर वह अपने सरले मैरिज हॉल के 25 कमरे खिलाडयिों के रहने के लिए निशुल्क उपलब्ध कराएंगे।

राजस्व कार्यों की रफ्तार बढ़ाने मुस्तैद हुआ प्रशासन

एसडीएम राजीव कहार की अध्यक्षता में जनपद कक्ष में हुई अहम बैठक

बैतूल। जिले को आयुक्त नर्मदापुरम की आगामी बैठक में पहला स्थान दिलाने के उद्देश्य से प्रशासनिक तैयारियां तेज कर दी गई हैं। 21 जून को कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर एसडीएम बैतूल राजीव कहार की अध्यक्षता में जनपद कक्ष में राजस्व विभागीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में तहसीलदार बैतूल नगर व बैतूल ग्रामीण गोवर्धन पाटे, नायब तहसीलदार श्याम सिंह उईके द्वारा राजस्व विभाग की सभी योजनाओं की बिंदुवार समीक्षा की गई। तहसील कार्यालय बैतूल में पदस्थ सभी पटवारियों से योजना वार जानकारी ली गई तथा जिन क्षेत्रों में प्रगति नहीं हुई वहां संबंधित कानूनगो और नाजिर को नियमानुसार कार्रवाई के निर्देश दिए गए।

राजस्व योजनाओं जैसे ई - केवाईसी, आधार लिंकिन्ग, नक्शा तरमीम, भू-राजस्व वसूली, अतिक्रमण, सीमांकन, सीएम हेल्पलाइन सहित प्रत्येक बिंदु पर 100 प्रतिशत प्रगति लाने के निर्देश दिए गए हैं। नक्शा तरमीम पर विशेष ध्यान देने को कहा गया है। एसडीएम राजीव कहार ने यह भी स्पष्ट किया कि सभी कार्य एक सप्ताह के भीतर पूर्ण किए जाएं ताकि जिले को बेहतर रैंक दिलाई जा सके। बैठक में यह भी निर्देशित किया गया कि जायद मूंग फसल की गिरदावरी समय से पहले पूर्ण की जाए जिससे किसानों को योजनाओं का शीघ्र लाभ मिल सके। नगरीय निकाय क्षेत्र में पदस्थ राजस्व निरीक्षक नजूल, बैतूल नगर तथा टिकारी, खंजनपुर, हमलापुर, बदनूर ढाना, गौठाना के पटवारियों को धारणाधिकार योजना, पट्टा नवीनीकरण एवं डायवर्सन टैक्स वसूली के निर्देश दिए गए। बैठक में राजस्व निरीक्षक बैतूल नगर भीमराव पोटफोडे, डायवर्सन निरीक्षक राहुल इवने, बैतूल बाजार निरीक्षक धनराज झल्लारे, नजूल बैतूल बाजार के निरीक्षक यशवंत वटके, कोलगांव के संतोष ठाकुर, बैतूल-1 के भगवानदास आर्मो, बैतूल-2 के जितेंद्र पंवार, तथा कल्याणपुर निरीक्षक हेमंत चिलहाते के स्थान पर मुख्यालय पटवारी कल्याणपुर ने भाग लिया। शेष ग्रामीण एवं नगर क्षेत्र के सभी पटवारी बैठक में उपस्थित रहे। तहसील प्रशासन ने बैतूल नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र के समस्त निवासियों से आग्रह किया है कि वे वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए भू-राजस्व, डायवर्सन टैक्स तथा अन्य शासकीय शुल्क समय पर जमा करें। मार्च माह का इंतजार न करें, बल्कि तुरंत अपने हल्का पटवारी अथवा नजूल राजस्व निरीक्षक से संपर्क कर अपने प्लॉट, मकान, आवासीय, औद्योगिक या शैक्षणिक संस्थानों का टैक्स नियमानुसार जमा करें और शासन को सहयोग करें।

बैतूल विकासखंड में 1 करोड़ 30 लाख की लागत से दो नए उप स्वास्थ्य केंद्र बनने से ग्रामीणों को मिलेगी इलाज की सुविधा

जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री धुर्वे ने ग्राम कनारा और माथनी में उप स्वास्थ्य केंद्रों का किया भूमि पूजन

बैतूल। जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे ने बैतूल विधानसभा के ग्राम कनारा और माथनी में 1 करोड़ 30 लाख रुपये की लागत से बनने वाले उप स्वास्थ्य केंद्रों का शनिवार को भूमि पूजन किया। इस दौरान जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री धुर्वे ने कहा कि बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के अथक प्रयासों का परिणाम है कि ग्राम पंचायत कनारा और ग्राम पंचायत माथनी में 65-65 लाख रुपये की लागत से दो उप स्वास्थ्य केंद्र बनेंगे। जिससे ग्रामीणों को उपचार की सुविधा मिलेगी और उन्हें उपचार के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। स्वास्थ्य केंद्रों का उद्देश्य क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करना है, जिससे गांवों में रह रहे लोगों को स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं आसानी से मिल सकें। भूमि पूजन कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य शैलेंद्र कुंभारे, किसान मोर्चा के महामंत्री पर्वतराव धोटे, सरपंच कनारा श्रीमती शर्मीला सदन उईके, सरपंच माथनी श्रीमती सरोज राठौर, जनपद सदस्य किरण पारधे, जनपद सदस्य माधोराव नानकर, मंडल महामंत्री कमल मालवीय, कोषाध्यक्ष जुबेर पटेल, चिंटू पटेल, केवल सिंह ठाकुर, श्रीमती सरोज जितेंद्र राठौर सहित अन्य जनप्रतिनिधि शामिल हुए। जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री धुर्वे महदगांव पंचायत के ग्राम भयावाड़ी में धरती आबा कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे ने कहा कि जनजातीय आबादी के लिए समान अवसरों का सृजन, सामाजिक-आर्थिक स्तर का विकास, बुनियादी ढांचे के सुधार और स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आजीविका के क्षेत्र में ठोस प्रगति के लिए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान चलाया जा रहा है। जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री धुर्वे ने कहा कि मेरा राजनीतिक और सामाजिक लक्ष्य है कि शासन की हर योजना अंतिम छोर के व्यक्ति तक पहुंचे। जब तक गांव, गरीब और आदिवासी लाभांवित नहीं होंगे, तब तक हमारा प्रयास अधूरा है। उन्होंने धरती आबा शिविर के माध्यम से किसानों, महिलाओं, युवाओं और वृद्धों के लिए समर्पित योजनाएं आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री आवास योजना, पेंशन योजना, राशन कार्ड, जनधन योजना आदि को सरल प्रक्रिया में लोगों तक पहुंचाया।

दुबई की इंटरनेशनल मॉडल विद्या जोशी का बैतूल में भव्य स्वागत

93 वर्षीय वयोवृद्ध के साथ किया योगाभ्यास

बैतूल। जन परिषद के स्थापना दिवस एवं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दुबई की इंटरनेशनल मॉडल, बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेज यूनिवर्स, मोस्ट पॉपुलर फेस ऑफ अबू धाबी एवं रनवे मॉडल व एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी पटेल, जनपरिषद के संयोजक रामजी श्रीवास्तव के साथ अलसुबह बैतूल के पुलिस ग्राउंड पहुंची। जहां उन्होंने जनपरिषद बैतूल चैप्टर के वयोवृद्ध सदस्य 93 वर्षीय लक्ष्मणराव घोडके जी के साथ कदम ताल मिलाते हुए तेज कदमों के साथ मॉर्निंग वॉक एवं योगाभ्यास किया। इस दौरान उन्होंने वहां उपस्थित लोगों से वयोवृद्ध लक्ष्मणराव घोडके के स्टेमिना की तारीफ करते हुए कहा कि 93 वर्ष की उम्र में भी श्री घोडके की चुस्ती-फुर्ती देखने लायक है और हम सभी को उनसे प्रेरणा लेना चाहिए। इस दौरान जनपरिषद बैतूल चैप्टर के अध्यक्ष विजय दीक्षित ने बताया कि वे अपने जीवन के 93 बसंत पार कर चुके हैं, लेकिन उनके नियमित व्यायाम, वॉकिंग-जॉगिंग, योग, ध्यान, प्राणायाम के चलते वे हमेशा चुस्त दुरुस्त रहते हैं और उनके चेहरे में सदैव चमक देखी जा सकती है। इस दौरान एक संक्षिप्त लेकिन गरिमामयी कार्यक्रम में जनपरिषद बैतूल चैप्टर के अध्यक्ष विजय दीक्षित, वरिष्ठ सदस्य व समाजसेवी अरुण किलेदार, जन परिषद के मीडिया प्रभारी एवं राष्ट्रीय पत्रकार कल्याण परिषद के महासचिव संजय द्विवेदी,

लोणारी कुनबी समाज के अध्यक्ष मुन्ना मानकर, लायंस क्लब बैतूल के अध्यक्ष बीआर कुबड़े आदि ने फूलमाला पहनाकर एवं पुष्प गुच्छ भेंटकर सुश्री विद्या जोशी पटेल तथा जनपरिषद के संयोजक रामजी श्रीवास्तव का स्वागत, अभिनंदन किया। इस अवसर पर भावुक होकर बैतूल में बिताए अपने बचपन और युवावस्था के दिनों का स्मरण करते हुए जनपरिषद के संयोजक रामजी श्रीवास्तव ने कहा कि यहां आकर अपनापन महसूस होता है। उन्होंने बताया कि बैतूल से ही जन परिषद की परिकल्पना की थी। सामाजिक जागरूकता, मूल्यों का संरक्षण और ग्रामीण नेतृत्व को मंच देने की सोच लेकर आज से 36 वर्ष पूर्व जो यात्रा शुरू की थी। आज बैतूल जिले के भ्रमण के दौरान देखकर लगता है कि यह सपना अब साकार हो रहा है। इस कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि सुश्री विद्या जोशी ने उपस्थित सभी लोगों के प्रति आभार जताते हुए कहा कि आज अंतरराष्ट्रीय योग दिवस एवं जन परिषद के स्थापना दिवस के अवसर पर मैं यहां आकर अभिभूत हूं, उन्होंने कहा कि योग, ध्यान, व्यायाम, वाकिंग-जॉगिंग सब एक दूसरे के पूरक है और ये सभी शरीर के लिए संजीवनी का काम करते है। इसलिए आज के आपाधापी, भागदौड़, असंयमित जीवन शैली के चलते आप सभी तनाव और अवसाद जैसे हानिकारक दुष्प्रभाव से बचने के लिए, योग-ध्यान-व्यायाम-वॉकिंग-जॉगिंग को जीवन का अभिन्न अंग जरुर बनावें। इस दौरान उन्होंने बैतूल के प्राकृतिक सौंदर्य की सराहना करते हुए कहा कि यहां की छोटी-बड़ी नदियां, डेम, झरने सुंदरताओं को समेटे हुए है और सतपुड़ा की पहाड़ियां और घने जंगलों ने इस खूबसूरती को दोगुना कर दिया है। इसके चलते यहां के रहवासियों को स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छ वातावरण का तो भरपूर लाभ प्रकृति से मिल ही रहा है। इस दौरान जनपरिषद बैतूल चैप्टर के सदस्यगण ज्ञान सिंह चौहान, प्रकाश नारायण जायसवाल, जगदीश श्रीवास्तव, कृष्णचंद अग्रवाल, समाजसेवी कृष्णा वागद्रे, संजय लोखंडे, ईशिता द्विवेदी आदि उपस्थित रहे।

जन परिषद बैतूलबाजार ने प्रतिभाओं का किया सम्मान

बैतूल। सामाजिक सरोकार की संस्था जनपरिषद समाज मे छुपी हुई प्रतिभाओं को सम्मानित करने हेतु 36 वर्षों से प्रयासरत है। संस्था की शुरुआत बैतुल से ही हुई और आज देश विदेश में सैकड़ो चेप्टर खुल चुके है। ये विचार जनपरिषद के संस्थापक वरिष्ठ पत्रकार रामजी श्रीवास्तव ने बैतूल बाजार में व्यक्त किये। गुनगुन होटल एंड रेस्टोरेंट फोरलेन बैतूल बाजार में जनपरिषद ने रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशीपटेल का भव्य स्वागत किया और विभिन्न क्षेत्रों को प्रतिभाओं का सम्मान किया। सम्मानित होने वालों में खेलकूद में जिले से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाली बालिका कु सृष्टि कृष्णकांत गावंडे, हायरसेकंडरी में टॉप आने वाली कु अंचल अभय वर्मा, रक्तवीर युवा पम्मू मयूर राठौर व पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली संस्था ग्रीन आर्मी के सदस्य थे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि दुबई (यू ए ई) की इंटरनेशनल मॉडल, बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेज दुबई, मोस्ट पॉपुलर फेस ऑफ दुबई, रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशीपटेल थी। कार्यक्रम को रामजी श्रीवास्तव के अलावा जिला अध्यक्ष विजय दीक्षित, भाजपा महिला मोर्चा से श्रीमती संगीता पानकर,और मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री विद्या जोशी पटेल ने सम्बोधित किया। संस्था का प्रतिवेदन का वाचन वरिष्ठ सदस्य सुभाष जामगडे ने किया। कार्यक्रम में भोपाल से जनपरिषद के नीलू श्रीवास्तव, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य संतोष राठौर, नगर परिषद उपाध्यक्ष सुरेश गायकवाड, पार्षद विजय पानकर, सांसद प्रतिनिधि अनूप वर्मा, पत्रकार महेंद्र गुड्डा वर्मा, नरेंद्र विजयकर, मोहित विजयकर, बजरंगदल के कृष्णकांत गावंडे, पवन राठौर, डॉ अनंत वर्मा, पीयूष वर्मा, राजेश कनाठे समेत युवा साथी उपस्थित थे। मंच संचालन भाजपा शिक्षक प्रकोष्ठ जिला संयोजक अजय पवार ने किया। जनपरिषद बैतूल बाजार के अध्यक्ष डॉ. भूपेंद्र राठौर ने आभार व्यक्त किया।

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्राध्यापक हैं।

हर यात्रा जीवन को समझने का एक अध्याय

यात्रा का हर क्रम जीवन का एक दर्शन होता है । यात्रा इसलिए होती है कि हम अपने को बेहतर ढ़ंग से जानने के लिए आगे बढ़ते हैं । यात्रा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना भर नहीं होता बल्कि उस स्थान को वहां के जीवन अनुशासन को पूरा जीने के लिए ही यात्रा पर आते हैं । जो यात्रा में होता है वह स्थानीय संस्कृति को समझने का जहां जतन करता है वहीं अपनी उपस्थिति से अपनी सामाजिक गति को भी प्रगट करता है । हर यात्रा एक से अधिक दुनिया को हमारे सामने रख देती है यहां से हम सब जीवन को सही ढ़ंग से जीने की कोशिश करते हैं। कुछ लोग इस तरह से यात्रा पर निकलते हैं कि उनके लिए यात्रा जीवन का एक पाठ हो और वे एक अच्छे विद्यार्थी की तरह से एक एक बात को सीखने की कोशिश करते हैं। यह भी कह सकते हैं कि सभ्यताओं के विकास की जो कहानी है वह यात्रा की ही एक तरह से विकास दशा का नाम है। यदि यात्रा में आप कुछ सीख नहीं पाते तो फिर यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना भर होता है। यह वैसे ही है जैसे कि स्पीडोमीटर में किमी की संख्या बढ़ती रहती है कि आज आप 58000 किलोमीटर पर चल रहे हैं और कल 58459। यह संख्या एक संकेत भर होती है कि आप इतना चलें पर इससे यह बिल्कुल पता नहीं चलता कि कहां चले? कैसे चलें? या चलने का क्या उद्देश्य था कुछ भी समझ में नहीं आता। इसी तरह जब यात्रा पर होते हुए आप जीवन की गति को समझते हैं, अपने भीतर एक तरह का बदलाव महसूस करते हैं तो यात्रा सफल होती है । यात्रा का अर्थ ही है की कुछ नया सीखें नया अनुभव लेकर चलें। यदि इस तरह से यात्रा हमें नहीं जोड़ पाती तो फिर उस यात्रा का न तो खुद के लिए कोई अर्थ होता है न ही औरों के लिए कोई खास मतलब होता है। यदि आप यात्रा को जीवन का एक अध्याय समझकर करते हैं तो आप जीवन के विकास क्रम में चल रहे होते हैं। कुछ लोगों के लिए यात्रा जीवन को समाज को समझने के लिए एक अवसर की तरह होती है तो कुछ लोग इसलिए भी निकल लेते हैं कि सब जा रहे हैं तो मुझे भी जाना चाहिए और फिर चल देते हैं। जीवन एक यात्रा ही है जिस तरह से जीवन में कहानियों का सिलसिला चलता रहता है उसी तरह से यात्रा में भी तरह तरह की बातें तरह तरह से कहानियां आती रहती हैं। आप यात्रा में हैं इसका अर्थ है कि आप जीवन क्रम में हैं और जिंदगी को जी रहे हैं। यात्रा के लिए कोई जरूरी नहीं है कि भौतिक यात्रा ही की जाये बहुत बार मानसिक यात्रा भी करनी पड़ती है। अपने आसपास की दुनिया को देखकर भी जीवन क्रम को समझा जा सकता है। मूल बात है जीवन जीने के लिए आगे बढ़ना। यह आप पर निर्भर करता है कि आप यात्रा करके जीते हैं कि किताब पढ़कर जीते हैं या फिल्म देखकर जीते हैं। संसार दृश्य है और संसार को देखते हुए ही जीवन जीना होता है। जो अस्तित्व में है जो जीवन क्रम में है वह संसार को देखेगा और देखकर जीना ही संसार के मूल में है। यह संसार देखने के लिए और जीने के लिए बना है। जब आप यात्रा में होते हैं तो जो दुनिया सामने होती है उसे पूरा जानने के लिए ही हम सब चल रहे होते हैं। यात्रा में संसार को विशेष ढ़ंग से देखने का काम करते हैं यह देखना ही मूलत: जीना होता है। यात्रा के क्रम में जिस तरह से संसार को देखते हैं वह देखना ही दृष्टि है। इसी मनोभूमि से हम जीवन को समझने की स्थिति में आते हैं। यात्रा एक क्रम है जीवन का जो यात्रा में है वही संसार को देख रहा है और दुनिया उसी के हिस्से में आती है। यात्रा एक तरह से आपके जीने का दृष्टिकोण भी होता है।

हर यात्रा एक सिलसिला है

कोई भी यात्रा कभी भी पूरी नहीं होती है वह एक क्रम को लेकर आती है। दुनिया को समझने के लिए बराबर से हमें एक न एक यात्रा पर निकलना होता है। जो किसी स्थान से किसी दूसरे स्थान पर गति करते नहीं जाता वह भी एक ही जगह से संसार भर की यात्रा करता रहता है। कहते हैं कि यात्रा मन की होती है। भौतिक दूरियों की होती है, मन ही है जो हमें संसार में लेकर जाता है। एक संसार से दूसरे संसार की जो यात्रा होती है वह मूलत: मन की ही यात्रा होती है। संसार का जो सौंदर्य है वह खींचता रहता है। संसार अलग अलग जगहों से अलग अलग ढ़ंग में अपने वैविध्य को लेकर आता है। आप संसार को जी रहे हैं यानी संसार को देख रहे हैं। संसार में हर कहीं हर जगह लोग इस कोशिश में रहते हैं कि चलें एक यात्रा पर और एक यात्रा से दूसरी और तीसरी यात्रा पर निकलते रहते हैं लोग। दुनिया की गति और दशा को समझने के लिए भी यात्रा जरूरी होती है। यात्रा के क्रम में हम बहुत कुछ सीखते हैं। एक जगह से दूसरी जगह पर दुनिया में जो अंतर होता है वह हमें नये सिरे से जीने का रहस्य देता है। दुनिया सुंदर है और इस सुंदर दुनिया को जानने के लिए हमें एक न एक यात्रा पर निकलना ही होता है। जब आदमी यात्रा पर होता है तो जो दुनिया उसके सामने होती है उसे वह पूरे मन से देखता है। देखते देखते वह बहुत कुछ सीख रहा होता है। कुछ लोग कुछ न कुछ सीखने के लिए ही यात्रा पर निकल जाते हैं और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि क्या करें कुछ कर नहीं रहे हैं तो घूम ही आते हैं और चल पड़ते हैं घूमने।

कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं होती, जो है वह सब यहीं है फिर भी आदमी न जाने कहां कहां भटकता रहता है, कहते हैं कि दुनिया देख रहा हूं। बहुत सारे लोग दुनिया की शैर पर निकल जाने को ही सबकुछ मानते हैं। यदि वे कहीं नहीं गये दो चार महीने में कहीं यात्रा नहीं किए तो उन्हें लगता ही नहीं की उन्होंने कुछ किया है। उन्हें एक जगह पर रहना अच्छा नहीं लगता है जब तक यहां से वहां न जाए जब तक दो चार बड़ी यात्रा न करें तब तक उनको लगता ही नहीं की दुनिया में वे हैं और उनका होना भी तभी अर्थ रखता है जब वे पूरी दुनिया की यात्रा पर निकल जाते हैं । अरे भाई कहां जा रहे हैं ? तो उनका बस एक ही उत्तर होता है कि थोड़ा बाहर निकल लेता हूं दुनिया कैसी है देख लेना चाहिए और फिर चल पड़ते हैं दुनिया देखने। यह दुनिया है ही देखने के लिए, जीने के लिए यदि आप दुनिया नहीं देखते हैं और नहीं जीते हैं तो फिर आप क्या कर रहे हैं ? यह संसार मिला है जीने के लिए इसलिए इस संसार को मन से जीने की कोशिश कीजिए। हर हाल में जिंदगी को जीना है और इस तरह से संसार को समझने के लिए जीने के लिए हम सबको यात्रा पर जाने की जरूरत होती है। यदि आप यात्रा पर नहीं जा रहे हैं तो आप फिर कुछ नहीं कर रहे हैं।

को देखने से ज्ञान बढ़ता है। एक ही जगह पड़े पड़े आदमी मंडूक हो जाता है मंडूकपने से बाहर निकलने के लिए आदमी को समय समय पर आगे आना चाहिए। मन भी एक ही जगह पर बैठे बैठे उब जाता है मन को बहलाने के लिए भी इधर से निकल कर उधर को चले जाना चाहिए। इधर उधर जाने से न केवल सीखने को मिलता है बल्कि दुनिया की बड़ी समझ भी बढ़ती है। अक्सर जो समझदार लोग हैं वे एक जगह से दूसरी जगह पर आते जाते रहते हैं। दुनिया उनके कदमों की नाप का विषय होती है। वे एक जगह पर पड़े नहीं रहते पड़ा रहना फालतू में चर्बी चढ़ाने जैसा ही है। कहते हैं कि जो आलसी लोग होते हैं वे एक जगह पर ही पड़े रहते हैं वे कहीं नहीं जाते और दुनिया में यदि कोई कहीं आता जाता है तो उसे कोसते रहते हैं। उनके लिए तो बस वही दुनिया है जहां वे रहते हैं और अपने आकार प्रकार के बीच ही रहते हुए दुनिया के सारे विषय आपने आजू-बाजू में खोजते रहते हैं।

सदानीरा में नदी बन बही कविताएँ
पीयूष मिश्रा ने बताई - नदियों की प्रेम कथा

भोपाल। देश के प्रख्यात गीतकार, संगीतकार, अभिनेता पीयूष मिश्रा ने नदियों की प्रेम कथा को कविता के माध्यम से प्रदर्शित किया। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत सदानीरा समागम के दूसरे दिन भारत भवन में नदीनामा-कविताओं के पुनर्पाठ का आयोजन हुआ। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, मैथिलिशरण गुप्त, माखनलाल चर्तुवेदी, सुमित्रानंदन पंत, सुभद्रा कुमारी चौहान, विद्यापति, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय, भारतेन्दु हरिशचन्द, गजानन माधव मुक्तिबोध, भवानीप्रसाद मिश्र, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, नरेश मेहता, जगदीश गुप्त, प्रभाकर माचवे, शिवमंगल सिंह सुमन, त्रिलोचन शास्त्री , गिरजाशंकर माथुर, हरिवंश राय बच्चन की जल को केन्द्र में रखकर रची कविताओं का पुनर्पाठ किया। देश के जाने माने अभिनेता, रंगकर्मी, लेखक, शिक्षाविद जैसे करन राजदान, राजीव वर्मा, अन्नू कपूर, सीमा कपूर, रूमी जाफरी, नवनी परिहार, स्वप्निल कोठारी ने किया। नदी, जल संरचनाओं को लेकर पीयूष मिश्रा ने कहा कि नदी सिर्फ जल नहीं, माँ है, संस्कृति की जीवंत धारा है। जब नदी बहती है, तब सभ्यता गाती है। उसका रुकना केवल पानी का रुकना नहीं, हमारे जीवन-संगीत का मौन हो जाना है। नदी को संसाधन नहीं, संवेदना समझना होगा। अगर कविता, गीत और स्मृति बचानी है, तो पहले नदियाँ बचानी होंगी। पीयूष कहते हैं- जहाँ पानी बहता है, वहीं आत्मा बसती है। आज ज़रूरत है नदी से रिश्ता जोड़ने की, न कि सिर्फ उसे बचाने की। तभी हम भी बचे रहेंगे।

निशब्द भेदा-एक जल-जगत की नृत्यगाथा

भारत भवन के अभिरंग सभागार में ख्यात नृत्यांगना व नृत्य संयोजक डॉ. शमा भाटे द्वारा निर्देशित नृत्य नाटिका निःशब्द भेदा का मंचन हुआ। यह प्रस्तुति जल के भीतर विद्यमान जीवन के अनकहे, अनदेखे संसार की एक संवेदनशील एवं सशक्त कलात्मक अभिव्यक्ति थी। यह नृत्य नाटिका जलचर जगत जल में निवास करने वाले जीवों, उनकी संवेदनाओं, संघर्षों और परिवेश के साथ उनके अस्तित्व की पड़ताल करती है। कथक नृत्य की शास्त्रीय परंपरा में रची गई यह प्रस्तुति सूक्ष्म मुद्राओं, गतियों, लय-संयोजन और संवेगों के माध्यम से उस संसार को मूर्त करती है, जिसे हम प्रायः भुला देते हैं। इस नृत्य संरचना में जल की तरलता, मत्स्यगति, जल में होने वाले सूक्ष्म कंपन और जलजीवों की सामूहिक और व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं को एक प्रतीकात्मक नृत्य भाषा में रूपांतरित किया गया। शमा भाटे का यह प्रयोग परंपरा और समकालीनता के बीच एक सेतु है जहाँ कथक की जानी-पहचानी शैलियाँ नए अर्थबोध और पर्यावरणीय विमर्श को स्वर देती।

10 से अधिक लघु फिल्मों का प्रदर्शन

सदानीरा समागम अंतर्गत दो दिवसीय प्रवाह फिल्म समारोह का शुभारंभ शनिवार प्रातः 10 बजे भारत भवन के अंभिरंग सभागार में हुआ। नदी, जलस्रोत, नदियों की वर्तमान स्थिति, पर्यावरण परिवर्तन तथा प्रकृति में जल और जीवन पर केन्द्रित 10 से अधिक लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। इस मौके पर फिल्म निर्देशक देवेन्द्र खंडेलवाल ने सदानीरा समागम के आयोजन के लिए वीर भारत न्यास को बधाई देते हुए कहा कि आज नदी, पर्यावरण, प्रकृति को संरक्षित, संवर्धित करने के लिए जो प्रयास मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किये जा रहे है, वह सराहनीय है।

सेवा के लिए जोश और जुनून का पूरा साल,रोटरी क्लब भोपाल मिडटाऊन के तीस बरस

भोपाल। रोटरी क्लब भोपाल मिड टाउन द्वारा वर्ष 2024 25 जोश और जुनून थीम के कार्यकाल में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए क्लब सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापन एवं क्लब अवार्ड्स कार्यक्रम केके साथ संपन्न हो गया। इसी के साथ क्लब ने शानदार सेवा के तीस बरस भी पूरे कर लिए। इस अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में क्लब अध्यक्ष, मानद सचिव एवं कोषाध्यक्ष द्वारा अवार्ड वितरित किए गए। यह अवसर था क्लब सदस्यों द्वारा की गई मेहनत और परिश्रम को पहचानने का और उन्हें सम्मानित करने का एक प्रयास।इस अवसर पर क्लब अध्यक्ष रोटेरियन डॉक्टर प्रीति उपाध्याय द्वारा वर्ष भर में विभिन्न सेवा प्रकल्पों पर किए गए कार्य का उल्लेख किया गया।इस वर्ष क्लब द्वारा विविध सेवा प्रकल्प जिन में प्रमुख रूप से विंटर गेम्स, प्लांटेशन, जनरल नॉलेज क्वीज, गुरु सम्मान, ब्लड डोनेशन कैम्प , दिव्यांग बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम कलरव, भारतीय सांकेतिक भाषा कार्यशाला एवं रोटरी जॉब फेयर का आयोजन किया। रोटेरियन संजय निगम, एसके भार्गव, सुयश सिंह, अमित तनेजा, विनोद तिवारी , रुचिता अग्रवाल, दिनेश मुंद्रा, आभास जैन, रश्मि गुर्जर आदि प्रमुख रूप से सम्मानित किये गये ।क्लब द्वारा सम्मानित सभी सदस्यों ने वर्ष भर में किए गए कार्यों के बारे में अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम का संचालन रो.अशोक गुप्ता द्वारा किया गया।

अनहद अहद में डॉ. मालती बसंत और डॉ. आबिद अम्बर का सम्मान

परकाया प्रवेश जैसा है बाल साहित्य का लेखन : प्रो.संजय द्विवेदी

भोपाल। भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) के पूर्व महानिदेशक प्रोफेसर संजय द्विवेदी का कहना है कि बाल साहित्य का लेखन 'परकाया प्रवेश' जैसा है। संवेदना, वात्सल्य और मासूमियत से ही बच्चों को संबोधित किया जा सकता है,अहद जी ऐसे ही रचनाकार थे। वो बहुत बेहतर इंसान थे, इसलिए वे बच्चों के लिए प्रभावी लेखन कर पाए।

प्रोफेसर द्विवेदी रविवार को हिंदी भवन में मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा शहर के सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार एवं बाल साहित्यकार अहद प्रकाश की स्मृति में आयोजित 'अनहद अहद' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

इस मौके पर सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. मालती बसन्त को 'अहद प्रकाश बाल साहित्य गौरव सम्मान 2025' व प्रख्यात ग़ज़लकार डॉ. अम्बर आबिद को 'अहद प्रकाश ग़ज़ल गौरव सम्मान 2025' से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि लघुकथा शोध केन्द्र की निदेशक कान्ता रॉय थीं और अध्यक्षता निराला सृजन पीठ की निदेशक डॉ. साधना बलवटे ने की। कार्यक्रम में स्व.अहद प्रकाश की धर्मपत्नी फ़रज़ाना अहद उपस्थित थीं। स्वागत उद्बोधन में संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' ने संस्थान के कार्यों और अहद प्रकाश के जीवन पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि कान्ता रॉय ने कहा कि अहद जी का बाल सुलभ मन सदैव सभी को जोड़ लेता रहा, आज उनकी स्मृतियों को ताज़ा करने का मौका मिला, जो नि:संदेह गरिमामय है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही डॉ. साधना बलवटे ने कहा कि बाल मन के कुशल चितेरे रहे अहद जी का जुड़ाव हर उम्र के लोगों के साथ सहज रहता था। इस मौके पर सम्मानमूर्ति डॉ. मालती बसंत ने अहद की कविता का पाठ किया। साथ ही, सम्मानमूर्ति डॉ. अम्बर आबिद ने अहद जी के जीवन से जुड़े कई प्रसंगों को साझा किया।

कार्यक्रम संचालन डॉ. मौसमी परिहार ने व आभार फ़रहा अहद ने माना।

हत्या के 24 घंटे बाद नहीं किया अंतिम संस्कार

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष और चंद्रशेखर आजाद ने परिजनों से बात की; आरोपियों के मकान गिराने की मांग की

सागर (नप्र)। सागर जिले में जमीन विवाद के चलते युवक की हत्या की गई। युवक की मौत के 24 घंटे बाद भी परिजनों ने शव अंतिम संस्कार नहीं किया। कल उन्होंने रहली-जबलपुर मार्ग पर 6 घंटे चक्काजाम किया था। आज भी वह उसे घर पर ही रखे हुए हैं। वह आरोपियों के घरों को तोड़ने की मांग कर रहे हैं। रविवार को कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी, नगीना सांसद और भीम आर्मी चीफ चंद्रशेखर आजाद ने परिवार के लोगों से बात की। जीतू पटवारी ने एसी से कार्रवाई कराने का आश्वासन दिया। वहीं चंद्रशेखर ने भी अधिकारियों बात कर परिजनों को मदद दिलाने का आश्वासन दिया। दरअसल रहली थाना क्षेत्र के ग्राम देवरी चौधरी में हुई ओंकार अहिरवार (28) की हत्या कर दी गई थी। मामले में पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया है, जिनमें से चार को गिरफ्तार किया है।

पिता के साथ जा रहा था, आरोपियों ने किया हमला: देवरी चौधरी निवासी मुल्लू अहिरवार और जुगराज यादव के परिवार में जमीन को लेकर विवाद चल रहा था। शनिवार सुबह मुल्लू अहिरवार अपने बेटे ओंकार अहिरवार अन्य के साथ अपने गांव वाले घर जा रहा था। तभी स्कूल के पास आरोपियों ने अचानक हमला कर दिया। उन्होंने ओंकार को पकड़ लिया और धारदार हथियारों से मारपीट की। मारपीट में ओंकार की गर्दन समेत शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोटे लगी। जिससे उसकी मौत हो गई। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा बनाया। पोस्टमार्ट्म कराकर परिवार वालों को सौंप दिया था।

रहली-जबलपुर मार्ग पर 6 घंटे किया चक्काजाम: वारदात से आक्रोशित परिजन और गांव के लोगों ने शनिवार को पोस्टमार्ट्म के बाद रहली-जबलपुर मार्ग पर शव रखकर चक्काजाम कर दिया। उन्होंने आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर जल्द गिरफ्तार करने की मांग की। आरोपियों के मकान तोड़ने की बात कही। सूचना पर पुलिस और प्रशासन के अधिकारी पहुंचे और समझाइश देकर उन्हें शांत कराया। इसी दौरान रहली विधायक और पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव के बेटे अभिषेक भार्गव मौके पर पहुंचे। उन्होंने पीड़ित परिवार से बात की। विधायक की ओर से 1 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दी गई। करीब 6 घंटे तक चक्काजाम चला। शाम 6 बजे के बाद पुलिस ने सख्ती कर चक्काजाम खत्म कराया था।

5 आरोपियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज: वारदात में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने आरोपी बिदर उर्फ विंद्रावन यादव, जुगराज यादव, बड्डू यादव, उमेश यादव और विशाल यादव के खिलाफ हत्या का प्रकरण दर्ज कर जांच में लिया।

तीन निर्माण एजेंसियों पर कार्रवाई करेगा पीडब्ल्यूडी

अनूपपुर की दो और बुरहानपुर की एक सड़क के निर्माण में मिली गड़बड़ी

भोपाल (नप्र)। लोक निर्माण विभाग की सड़कों का घटिया निर्माण करने और काम समय पर पूरा नहीं करने के मामले में अनूपपुर जिले में काम करने वाले, जो सड़क निर्माण एजेंसियों और बुरहानपुर की एक सड़क एजेंसी के खिलाफ कार्रवाई होगी। लोक निर्माण विभाग के मंत्री ने इसके लिए विभाग के आला अफसरों को निर्देश दिए हैं। साथ ही कहा है कि सड़क निर्माण के साथ 500 लोक सरोवर बनाए जाएंगे। जिसके निर्माण का इंस्पेक्शन वे खुद करने जाएंगे।

लोक निर्माण विभाग की टीम द्वारा किए गए रैंडम इंस्पेक्शन में मुख्य अभियंताओं की सात टीमों ने बैतूल, बालाघाट, श्योपुर, बुरहानपुर, अनूपपुर, मंदसौर एवं दमोह जिलों में 35 कार्यों का निरीक्षण किया। इनमें 14 कार्य लोक निर्माण विभाग के सड़क और पुल, 11 कार्य पी.आई.यू. के भवन, 6 कार्य म.प्र. सड़क विकास निगम, 3 कार्य म.प्र. भवन विकास निगम एवं 1 कार्य एनएचएआई का था। लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से निरीक्षण दलों से रिपोर्ट की समीक्षा की गई। बैठक में प्रमुख अभियंता (बी एण्ड आर) के.पी.एस राणा, प्रमुख अभियंता (भवन) एसआर बघेल, प्रमुख अभियंता (भवन विकास निगम) अनिल श्रीवास्तव, तकनीकी सलाहकार आरके मेहरा, उपसचिव एआर सिंह सहित सभी मुख्य अभियंता, अधीक्षण यंत्री, कार्यपालन यंत्री एवं निरीक्षण करने वाले अफसर मौजूद रहे।

अच्छा काम पाए जाने पर इनकी हुई प्रशंसा: समीक्षा के दौरान बालाघाट जिले के कुटुंब न्यायालय भवन कार्य को बहुत अच्छा पाया गया। जिसके लिए कार्यपालन यंत्री उदल सिंह उईके, अनुविभागीय अधिकारी आनंद राव बनसोर एवं उपयंत्री ममता धुर्वे की सराहना की गई। श्योपुर जिले में कराहल-सरई-बरगवां मार्ग के कार्य को अच्छा पाए जाने पर कार्यपालन यंत्री विष्णु अग्रवाल, अनुविभागीय अधिकारी अंजली प्रजापति एवं उपयंत्री एमसी दंडोतिया की प्रशंसा की गई।

इन एजेंसियों का काम घटिया मिला, कार्रवाई के निर्देश

अनूपपुर जिले में अनूपपुर-दर्री खेरखा मार्ग का कार्य संतोषजनक नहीं पाया गया। जिस पर ठेकेदार मैसर्स गावर कंस्ट्रक्शन लिमिटेड गुरुग्राम के विरुद्ध कार्रवाई के लिए निर्देशित किया गया। बुरहानपुर जिले में सिवाल-केरपानी-अमूल्हा परेठा मार्ग में कार्य विलंब पाए जाने पर मैसर्स केजी गुप्ता इन्फ्रास्ट्रक्चर इंदौर के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए गए। अनूपपुर जिले में कमरोद-चटुआ-टंकीटोला मार्ग के कार्य पर मैसर्स सिद्धि विनायक बिल्डर्स एंड सप्लायर्स शहडोल के विरुद्ध कार्रवाई के निर्देश संबंधित मुख्य अभियंता को दिए गए हैं।

एक जुलाई को एक लाख पौधे रोपेंगे पीडब्ल्यूडी अफसर

मंत्री राकेश सिंह ने एक जुलाई को एक लाख पौधरोपण किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने पौधों की सुरक्षा, रखरखाव एवं जियोटैग फोटोग्राफ्स अपलोड करने के निर्देश भी दिए। सड़क निर्माण के साथ जल संरक्षण को प्रोत्साहित करते हुए मंत्री सिंह ने 500 लोक कल्याण सरोवरों के निर्माण का लक्ष्य तय किया है।इनमें से 20 सरोवरों का निरीक्षण स्वयं मंत्री करेंगे, जबकि 10-10 सरोवरों का निरीक्षण मुख्य अभियंता करेंगे। 8, 9 एवं 10 जून 2025 को चलाए गए निरीक्षण अभियान में चिह्नित सड़कों की शीघ्र मरम्मत के निर्देश भी दिए गए हैं।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने वैदिक सनातनी ज्योतिष महामंथन सम्मेलन का किया शुभारंभ

भोपाल । उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि वैदिक सनातनी ज्योतिष महामंथन सम्मेलन में ज्योतिष के ज्ञान और अनुभव का लाभ मिलेगा। यह सम्मेलन इस क्षेत्र के लिए एक उपलब्धि साबित होगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रीवा प्रकोष्ठ के सभागार में वैदिक सनातनी ज्योतिष महामंथन सम्मेलन का शुभारंभ किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि हमारी प्राचीन संस्कृति में ज्योतिष का विशेष महत्व रहा है। ज्योतिष के माध्यम से सटीक गणना का आकलन करने की विधि सर्वमान्य रही है। उन्होंने कहा कि इस ज्योतिष यात्रा में जो ज्ञान और अनुभव मिलेगें उससे समाज और जनसामान्य का कल्याण होगा। सांसद श्री जनार्दन मिश्र ने रीवा में आयोजित हो रहे ज्योतिष महामंथन के लिए अपनी शुभकामनाएँ दी। अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, पूर्व महापौर वीरेन्द्र गुप्त, पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी व सहित देश के ख्याति प्राप्त ज्योतिषाचार्य तथा विद्वान उपस्थित रहे।

25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' मनाएगी बीजेपी

आपातकाल की 50वीं बरसी पर होंगे कार्यक्रम, केन्द्रीय मंत्री सीआर पाटिल होंगे शामिल

भोपाल (नप्र)। 25 जून को बीजेपी संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाएगी। 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल के दिन पर बीजेपी हर साल आपातकाल दिवस का आयोजन करती रही है। इस बार 25 जून को संविधान हत्या दिवस का नाम दिया गया है।

केन्द्रीय मंत्री सीआर पाटिल होंगे शामिल

25 जून को भोपाल में होने वाले संविधान हत्या दिवस के कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री सीआर पाटिल बतौर मुख्य वक्ता शामिल होंगे। इस कार्यक्रम में मीसाबंदियों का सम्मान किया जाएगा।

हर जिले में होंगे कार्यक्रम

25 जून को मध्यप्रदेश में बीजेपी ने 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में कार्यक्रम मनाने की तैयारियां शुरू कर दी हैं। इस कार्यक्रम का नाम 'आपातकाल के अध्याय के 50 वर्ष' रखा गया है। बीजेपी ने प्रदेश स्तर से लेकर जिला स्तर तक कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई है। 25 जून को हर जिले में कार्यक्रम होंगे। प्रदेश भर में होने वाले कार्यक्रमों में वक्ता के रूप में केंद्रीय मंत्री, बीजेपी के राष्ट्रीय पदाधिकारी, मुख्यमंत्री और मंत्री अलग-अलग जिलों में जाकर आपातकाल की विभीषिका बताएंगे।

सुधांशु त्रिवेदी इंदौर में होंगे शामिल: बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और सांसद सुधांशु त्रिवेदी इंदौर जिले के कार्यक्रम में शामिल होंगे। केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार सागर, बीजेपी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरोज पांडे ग्वालियर, केन्द्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर उज्जैन, केन्द्रीय मंत्री डीडी उईके नर्मदापुरम के कार्यक्रम में शामिल होंगे।

हर जिले में लगेगी प्रदर्शनी

कार्यक्रम में प्रदेश संयोजक और भोपाल सांसद आलोक शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि 25 जून को संविधान की हत्या हुई थी। 25 जून आपातकाल का काला अध्याय है। बीजेपी सभी जिला मुख्यालय पर संविधान हत्या दिवस पर 'आपातकाल के अध्याय के 50 वर्ष' कार्यक्रम कर रही है। आपातकाल की विभीषिका बताते हुए सभी जिलों में प्रदर्शनी लगेगी। लोकतंत्र सेनानियों का सभी जिलों में सम्मान होगा, उनके परिजन का भी सम्मान होगा। जिन लोगों ने आपातकाल के दौरान यातनाएं सही हैं। उनके परिवारों को भी सम्मान करेंगे।

कांग्रेस ने कहा- आरएसएस ने मुख्यालय पर तिरंगा फहराने से परहेज किया

बीजेपी के संविधान हत्या दिवस मनाने पर कांग्रेस प्रवक्ता स्वदेश शर्मा ने कहा- बीजेपी की मातृ संस्था आरएसएस ने अपने मुख्यालय पर तिरंगा फहराने से हमेशा परहेज किया। संविधान की प्रतियां जलाई। आज वही बीजेपी संविधान की हत्या दिवस किस मुंह से मना रही है। जिन लोगों ने संविधान को तार-तार किया, संविधान को तोड़ने वाले संविधान हत्या दिवस मना रहे हैं।

6 महीने से सीने में दर्द और होती थी घबराहट

जांच में पता चला दिल से हो रहा ब्लड लीक, एम्स में हुई बेंटॉल सर्जरी

भोपाल (नप्र)। हल्के लक्षण भी गंभीर बीमारी के संकेत हो सकते हैं। ऐसा ही एक केस एम्स भोपाल से सामने आया है। सिहोर निवासी 44 वर्षीय मरीज को करीब 6 माह से सीने में रुक रुक के दर्द और घबराहट होती थी। कई दिनों तक इन्हें गैस-एसिडिटी के लक्षण सोच मरीज ने गंभीरता से नहीं लिया। समय के साथ समस्या बढ़ते-बढ़ते असहनीय दर्द और बेचैनी में बदल गई। मरीज जिले के निजी अस्पताल में गए, वहां उनकी बीमारी पकड़ में नहीं आई। ऐसे में वे एम्स भोपाल आए। जहां जांच में सामने आया कि मरीज के दिल में ब्लड लीक हो रहा है। यह जानलेवा स्थिति है, ऐसे में उनकी जटिल बेंटॉल सर्जरी की गई।

लगाई आर्टिफिशियल महाधमनी और वॉल्व: एम्स प्रबंधन से मिली जानकारी के अनुसार, संस्थान के कार्डियोथोरेसिक एवं वेस्कुलर सर्जरी (सीटीवीएस) विभाग ने यह अत्यंत जटिल और दुर्लभ हृदय सर्जरी को सफलतापूर्वक किया। मरीज कि छाती की महाधमनी (एओर्टा) में लगभग 8-10 सेमी का बड़ा एओर्टिक एन्यूरिज्म (महाधमनी की सूजन) था। जो लगातार बढ़ रहा था और कभी भी फट सकता था। इसके अतिरिक्त, मरीज का एओर्टिक वॉल्व (हृदय का वॉल्व) भी अत्यधिक लीक कर रहा था। इस गंभीर स्थिति के इलाज के लिए मरीज में बदल कर आर्टिफिशियल महाधमनी और एओर्टिक वॉल्व लगाया गया। जिसे चिकित्सकीय भाषा में 'बेंटॉल सर्जरी' कहा जाता है।

रेयर ब्लड ग्रुप था चुनौती

इस जटिल सर्जरी में सबसे बड़ी चुनौती मरीज का रेयर ब्लड ग्रुप का होना था। डॉक्टरों ने बताया, मरीज का रक्त समूह बी-नेगेटिव था। इस कारण से कई निजी अस्पताल ने सर्जरी से इनकार कर दिया था। जबकि एम्स में सर्जरी के दौरान मरीज को रक्त चढ़ाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। यह उच्च जोखिम वाली सर्जरी डॉ. योगेश के निवारिया, डॉ. एम किशन, डॉ. सुरेंद्र सिंह यादव, डॉ. राहुल शर्मा, डॉ. विक्रम वट्टी और डॉ. आदित्य सिरोही की विशेषज्ञ टीम द्वारा किया गया।

निदेशक ने कहा- उपलब्धियों पर गर्व

एम्स के निदेशक डॉ. अजय सिंह ने कहा, यह मामला एम्स की नैदानिक उत्कृष्टता का एक बेहतरीन उदाहरण है। यह पूरा उपचार आयुष्मान भारत योजना के तहत किया गया। जिससे मरीज पर कोई वित्त भार नहीं आया। पहले ऐसे जटिल ऑपरेशन के लिए मध्यप्रदेश के मरीजों को राज्य के बाहर के उच्च स्तरीय केंद्रों में रेफर किया जाता था। अब वे यह इलाज एम्स भोपाल में ही हो रहे हैं। इन उपलब्धियां पर हमें गर्व है।

बुरहानपुर में बीमारी ठीक करने के बहाने धर्मांतरण का प्रयास

बीमारी ठीक करने के नाम पर प्रेयर, 6 लोगों पर एफआईआर, तीन को हिंदू संगठनों ने पकड़ा

बुरहानपुर (नप्र)। बुरहानपुर जिले में धर्मांतरण का मामला सामने आया है। नावरा चौकी क्षेत्र के हैदरपुर गांव में 21 जून की रात 10 बजे, एक महिला के इलाज के बहाने धर्मांतरण का प्रयास किया गया। बलीराम बड़ोले और उसकी पत्नी अनीता सहित छह लोगों ने राधा के इलाज के नाम पर पति अनिल को धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया।

आरोपियों ने पीड़ित परिवार को हर महीने पैसे, मकान और बच्चों की शिक्षा के लिए आर्थिक मदद का प्रलोभन दिया। विरोध करने पर आरोपियों ने मारपीट भी की। इस मामले को लेकर हिंदू संगठन के पदाधिकारियों और ग्रामीणों ने तीन आरोपियों को पकड़कर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर आरोपियों को हिरासत में ले लिया। नेपानगर थाना प्रभारी ज्ञानू जायसवाल ने बताया कि ग्राम हैदरपुर निवासी अनिल पुत्र मुकेश की शिकायत पर दो महिलाओं सहित कुल 6 आरोपियों के

खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। आरोपियों पर धारा 115-2, 351-3, बीएनएस की धारा 3-5 और मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम 2021 के तहत कार्रवाई की जा रही है।

यह है पूरा मामला

पुलिस को की गई शिकायत में अनिल पिता मुकेश निवासी ग्राम हैदरपुर ने कहा-ग्राम हैदरपुर का बलीराम बड़ोले व उसकी पत्नी अनीता पिछले कुछ समय से नेपानगर व अन्य गांव, फालिए, नवाड़ों में घूम घूमकर ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। 21 जून को रात करीब 10 बजे बलीराम व उसकी पत्नी अनीता ग्राम हैदरपुर में मेरे घर आए और बोले तेरी पत्नी राधा की तबीयत खराब रहती है। उसका इलाज कर ठीक कर देंगे। मैं उनकी बातों में आ गया। अपनी बुआ के लड़के रेवसिंग और अपने मित्र रवींद्र के साथ अपनी पत्नी राधा को इलाज के लिए बलीराम के घर लेकर गए। इसे लेकर उसने लालच दिया कि ईसाई धर्म अपना लो। तुम्हें, परिवार वालों को हर महीने रुपए मिलेंगे। मकान बनाने के लिए रुपया दिया जाएगा। पढ़ाई के लिए फीस भी माफ हो जाएगी। लालच देकर बरगलाने लगे। मेरी पत्नी का किताब में से मंत्र पढ़कर इलाज करने लगे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मैंने कहा तुम भोले भाले आदिवासियों को गुमराह कर धर्म परिवर्तन कराते हो। मैं तुम्हारी रिपोर्ट करूंगा। मैं अपनी पत्नी को लेकर वापस घर ले जाने लगा तो नाराज होकर बलीराम, विलास पिता गासला, सायसिंग पिता बडला, गना पिता काशीराम, कला बाई मुझे रोकने लगे। मेरे साथ झूमाझटकी की।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हुई बैठक

उज्जैन सिंहस्थ से जुड़े रेलवे स्टेशनों के लिए बनेगा क्राउड मैनेजमेंट प्लान, शिप्रा के 9 किमी के घाट 88 करोड़ रुपए से सुधरेंगे

भोपाल (नप्र)। उज्जैन में वर्ष 2028 में होने वाले सिंहस्थ के लिए उज्जैन सहित आसपास के जिलों के जो रेलवे स्टेशन उपयोग होंगे, उनके लिए मास्टर प्लान और क्राउड मैनेजमेंट प्लान बनेगा। इससे भीड़ को नियंत्रित तरीके से संभाला जा सकेगा। इसी के हिसाब से संबंधित स्टेशनों पर श्रद्धालुओं के लिए ट्रेनों की संख्या तय की जाएगी। हाल ही में मुख्य सचिव अनुराग जैन की अध्यक्षता में हुई बैठक में इस संबंध में निर्देश दिए गए। श्रद्धालु जिन स्टेशनों से आएंगे, उनके लिए मास्टर प्लान और क्राउड मैनेजमेंट बनाने के निर्देश दिए हैं। स्टेशनों पर जितने ट्रैक्स उपलब्ध होंगे, उसी के मुताबिक ट्रेनों की संख्या और फेरे तय होंगे। हर स्टेशन के लिए भीड़ का अनुमान लगाया जाएगा। स्टेशनों के आसपास उपलब्ध जमीन जांची जाएगी ताकि तय हो सके कि कितने वाहनों को जाने की अनुमति होगी।हर स्टेशन पर आने वाले श्रद्धालुओं का अनुमान लगाया जाएगा उज्जैन जिले में 982 करोड़ रुपए की लागत से 27 कामों ?को सहमति दी खरगोन में 110 करोड़ रुपए से देवी अहिल्या लोक निर्माण को भी मंजूरी

संवारेंगे शिप्रा के घाट

महाकुंभ को लेकर सरकार पवित्र शिप्रा नदी के दोनों और 15 -15 किमी पक्के घाट बनाने की योजना बना रही है। वर्तमान में मौजूद लगभग 9 किमी घाटों को सुधारने और सुंदर बनाने के लिए 88 करोड़ की परियोजना प्रस्तावित हुई है। घाटों में सुरक्षा के लिए फिसलन रहित, मजबूत पत्थर लगेंगे। सिंहस्थ से जुड़ी इस उच्च-स्तरीय समीक्षा में उज्जैन जिले के लिए 982 करोड़ की लागत से कुल 27 कामों की सहमति मिली है।

डंपिंग ग्राउंड की सफाई की योजना: उज्जैन नगर को साफ सुथरा और स्वच्छ बनाने पर विशेष फोकस है। इसके लिए नगर में एमआर 5 पर मौजूद डंपिंग साइट के सालों से पड़े हुए कचरे की सफाई की भी योजना है। 5.5 करोड़ से इसकी योजना बनी है। ये परियोजना भी स्वीकृत हो चुकी है।

पंचकोशी मार्ग का प्रस्ताव

पीडब्ल्यूडी द्वारा पंचकोशी मार्ग का 73 करोड़ का प्रस्ताव बनाया गया था। सीएस ने पूछा है कि सिंहस्थ के दौरान और उसके बाद इस मार्ग का क्या उपयोग होगा। यह भी पूछा गया है कि इस मार्ग के लिए क्या कोई वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध है। इन दोनों तथ्यों का परीक्षण कर दोबारा पीडब्ल्यूडी द्वारा प्रस्ताव दिया जाएगा। ओंकारेश्वर में नर्मदा नदी पर झूला पुल है। इसके अतिरिक्त 48 करोड़ की लागत से पीडब्ल्यूडी एक नया झूला पुल बनाएगा। ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग क्षेत्र के विकास की भी योजना प्रस्तावित है। खरगोन में 110 करोड़ की लागत से देवी अहिल्या लोक निर्माण को भी स्वीकृति दी गई है।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

क्या धामी की तरह साय उठाएंगे कदम

छत्तीसगढ़ में भारतमाला परियोजना,अरपा-भैंसाझार परियोजना और अन्य जमीन घोटालों में अब तक एसडीएम, तहसीलदार या नीचे के कर्मचारियों पर ही गाज गिरी है। कलेक्टर या किसी बड़े आईएएस अफसर का बाल बांका नहीं हुआ है। वहीं उत्तराखंड में पुष्करसिंह धामी की सरकार ने हरिद्वार जमीन घोटाले के मामले में दो आईएएस, एक राज्य सेवा के अधिकारी समेत 12 लोगों को झटके से सस्पेंड कर दिया। इस कारण अब चर्चा होने लगी है कि क्या छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भी उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्करसिंह धामी की तरह कदम उठाएंगे? छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड में कुछ समानताएं भी हैं। दोनों राज्य एक साथ बने हैं और दोनों ही भाजपा शासित राज्य हैं। पिछले दिनों कांग्रेस के नेता और रायपुर के पूर्व महापौर प्रमोद दुबे ने सोशल मीडिया (फेसबुक) में एक पोस्ट डालकर सीधे -सीधे एक कलेक्टर पर जमीन के खेल में शामिल होने का आरोप लगा दिया है। उन्होंने लिखा है ÷ कलेक्टर मठ की जमीन लेकर वापस कर दें, जिनके मातहत काम करने वाले एडिशनल कलेक्टर से लेकर पटवारी तक को जमीन मिल गई हो, तो जांच क्या खाख होगी? आमतौर पर मुआवजा वितरण में कलेक्टर सीधे जिम्मेदार नहीं होते,पर जिले के मुखिया के नाते निगरानी की भूमिका रहती है। माना जाता है कि अधीनस्थों पर उनका पूरा नियंत्रण होना चाहिए और कोई गड़बड़ी न कर पाए। गड़बड़ी के लिए कलेक्टर को ही नैतिक जिम्मेदार माना जाता है। अब कलेक्टर ही खेल में शामिल हो जाय तो फिर नैतिकता चूल्हे में गई,इसलिए छत्तीसगढ़ में भी उत्तराखंड की तरह कार्रवाई की बात होने लगी है। भारतमाला परियोजना में मुआवजा वितरण में 500 करोड़ के खेला की बात हो रही है। भारतमाला परियोजना में मुआवजा वितरण की निगरानी रायपुर के कलेक्टर को करनी थी। भारतमाला परियोजना का जब मुआवजा बांटा जा रहा था, तब यहां जो अफसर कलेक्टर थे, आजकल दूसरे जिले की कलेक्टरी का आनंद ले रहे हैं और भाजपा के एक बड़े नेता का उन्हें आशीर्वाद है। कलेक्टर साहब का तब एक एडिशनल कलेक्टर से गठजोड़ बड़ी चर्चा में था। कहते हैं कि कलेक्टर साहब और एडिशनल साहब जिले दर जिले साथ भी चले। अब देखते हैं प्रमोद दुबे का वार कितना असरकारक होता है।

अभिषेक सिंह बनेंगे प्रदेश महामंत्री?

चर्चा है कि पूर्व मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह के पुत्र अभिषेक सिंह को संगठन में लिया जाएगा। खबर है कि उन्हें महामंत्री बनाया जा सकता है। कहा जा रहा है कि जल्द ही प्रदेश संगठन में फेरबदल होना है। प्रदेश संगठन के कई पदाधिकारियों को निगम-मंडलों का अध्यक्ष बना दिया गया और वे दोहरे प्रभार संभाल रहे हैं। अभिषेक सिंह 2014 से 2019 तक राजनांदगांव के सांसद रहे हैं। भाजपा ने 2019 में उनका टिकट काटकर संतोष पांडे को उम्मीदवार बना दिया। संतोष पांडे लगातार दो बार से राजनांदगांव से सांसद हैं, पर भाजपा ने 2019 के बाद अभिषेक सिंह को किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं दी है। कहते हैं अब पार्टी उनके बारे में सोच रही है।

मुख्य सचिव चयन की उलटी गिनती

मुख्य सचिव अमिताभ जैन का कार्यकाल 30 जून को समाप्त हो जाएगा, ऐसे में छत्तीसगढ़ के नए मुख्य सचिव के चयन के लिए अब एक हफ्ते का समय शेष रह गया। पहले अमिताभ जैन को सेवावृद्धि देने की चर्चा थी, पर अब लगता नहीं, उन्हें सेवावृद्धि मिलेगी, क्योंकि भाजपा के कुछ नेताओं ने ही उनकी शिकायत दिल्ली कर दी है। इस कारण माना जा रहा है छत्तीसगढ़ को 30 जून को नया मुख्य सचिव मिलेगा। नए मुख्य सचिव के लिए अमित अग्रवाल, सुब्रत साहू और मनोज पिंगुआ का नाम चर्चा में है। अमित अग्रवाल अभी दिल्ली में भारत सरकार में सचिव हैं। सुब्रत साहू और मनोज पिंगुआ दोनों छत्तीसगढ़ में हैं। सुब्रत साहू कांग्रेस शासन में मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव थे। इस कारण विष्णुदेव साय की सरकार ने शुरूआती दिनों में उन्हें सरकार के मुख्यधारा से हटा दिया था, पर समय के साथ उन्होंने सरकार में अपनी स्थिति सुधार ली। अभी वे प्रशासन अकादमी के महानिदेशक के साथ अपर मुख्य सचिव सहकारिता भी हैं। भूपेश बघेल के करीबी रहे कई आईएएस विवादों या मामलों में उलझ गए हैं, पर सुब्रत साहू अपने को पाक-साफ रखने में कामयाब रहे हैं। मनोज पिंगुआ साफ़-सुथरे और सरल-सहज हैं। अभी वे अपर मुख्य सचिव गृह हैं। माना जा रहा मुख्य सचिव का फैसला दिल्ली से होगा। राज्य से राय ली जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री की नजर में कोई अफसर होगा तो वह आईएएस मुख्य सचिव बन जाएगा। मध्यप्रदेश, राजस्थान और ओडिशा में चीफ सेक्रेटरी दिल्ली से ही भेजे गए। कहा जा रहा है कि दिल्ली के कुछ नेता और अफसर सुब्रत साहू के लिए लाबिंग कर रहे हैं। मनोज पिंगुआ आदिवासी हैं और उन्हें मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की पसंद बताया जा रहा है।

गृह विभाग की चूक या कुछ और

कहते हैं गृह विभाग ने 2020 बैच के सीधी भर्ती वाले आईपीएस अफसर चिराग जैन को प्रमोशन देना भूल गया है। चिराग जैन अभी भी दुर्ग में सीएसपी के पद पर कार्यरत हैं। 2020 बैच के आठ आईपीएस अफसर छत्तीसगढ़ में हैं। इनमें सात आईपीएस अफसर एएसपी प्रमोट हो गए हैं। बताते हैं सरकार ने 2020 ही नहीं, 2021 बैच के नौ आईपीएस अफसरों को भी एएसपी बनाकर अलग-अलग जिलों में तैनात कर दिया है। चिराग जैन के प्रमोशन न होने को कुछ लोग सरकार की चूक मान रहे हैं, तो कुछ लोग और ही कारण बता रहे हैं, पर चिराग जैन का प्रमोशन न होना चर्चा का विषय है।

शिवप्रकाश की मंत्रियों को खरी-खरी

कहते हैं कि 18 जून को मंत्रियों और विधायकों की बैठक में भाजपा के राष्ट्रीय सह महामंत्री (संगठन) ने राज्य के कई मंत्रियों को खरी-खरी सुनाई और उन्हें धरातल में रहने की हिदायत दी। खबर है कि शिवप्रकाश ने भ्रष्टाचार का भी जिक्र किया और संकेत दिए कि सभी पर संगठन की नजर है। चर्चा है कि कई मंत्रियों के व्यवहार और कार्यशैली से विधायकों -कार्यकर्ताओं की नाराजगी का भी उन्होंने जिक्र किया और कार्यकर्ताओं से मेल-मुलाकात की भी सलाह दी। बताते हैं कि शिवप्रकाश के निशाने पर कई मंत्री थे। उन्होंने विधायकों को भी जमीन न छोड़ने का मशविरा दिया। बताते हैं कि शिवप्रकाश की हिदायत के बाद मंत्रियों में खलबली है। अब देखते हैं कितने दिन तक शिवप्रकाश जी की घुड़की काम आती है। मंत्री -विधायकों की बैठक में भाजपा नेताओं के साथ संघ के पदाधिकारी भी मौजूद थे।

कटघरे में कप्तान

छत्तीसगढ़ के मोहला-मानपुर-चौकी के एसपी और 2013 के आईपीएस यशपाल सिंह इन दिनों कटघरे में हैं। यशपाल सिंह की भर्ती बीएसएफ में हुई थी। यशपाल सिंह का बीएसएफ से छत्तीसगढ़ राज्य पुलिस सेवा में समायोजन और फिर आईपीएस पदोन्नति को लेकर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने संज्ञान में लिया है। सोशल एक्टिविस्ट विवेक कुमार सिंह की शिकायत पर यशपाल सिंह के मामले में गृह मंत्रालय ने जांच और आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। गृह मंत्रालय ने छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव और यूपीएससी के सचिव को पत्र लिखा है। मामले की समीक्षा होती है, तो यशपाल सिंह की मुसीबत बढ़ सकती है। 2017 में छत्तीसगढ़ राज्य पुलिस सेवा के अधिकारियों ने यशपाल सिंह के संविलियन और आईपीएस अवार्ड को लेकर विरोध किया था, तब छत्तीसगढ़ के एक भाजपा नेता और उत्तरप्रदेश के भाजपा नेता के दबाव में सरकार आ गई और यशपाल सिंह के बल्ले-बल्ले हो गए। 2017 में राज्य में भाजपा की ही सरकार थी। अब एक बार फिर यशपाल सिंह को लेकर छत्तीसगढ़ राज्य पुलिस सेवा के अफसरों में नाराजगी की लहर फूटने लगी है। चर्चा होने लगी है बैक डोर एंट्री वालों को जिले की कमान और मूल निवासियों को बटालियन की जिम्मेदारी।

कांग्रेस में भूपेश बघेल भारी

कहते हैं जब कांग्रेस सत्ता में होती है तो मुख्यमंत्री की ही चलती है। प्रदेश अध्यक्ष साइड लाइन में रहता है, पर जब वह सत्ता में नहीं होती तो प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष की भूमिका अहम हो जाती है। पर भाजपा सरकार पर वार में पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज और नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत से आगे नजर आते हैं। दीपक बैज और डॉ चरणदास महंत सरकार पर वार तो करते हैं , पर भूपेश बघेल ऐसे मुद्दे उछाल देते हैं, जिससे वे सुर्ख़ियों में आ जाते हैं। भूपेश बघेल जब मुख्यमंत्री थे, तब भाजपा की तरफ से पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमनसिंह ज्यादा वार करते थे। लड़ाई सरकार विरुद्ध डॉ रमनसिंह चली। अब लगता है सरकार विरुद्ध भूपेश बघेल हो गई है। बघेल राष्ट्रीय महासचिव और पंजाब प्रभारी हैं, पर छत्तीसगढ़ के मामले में सुरसुरी छोड़ देते हैं और राजनीति में गर्माहट पैदा कर देते हैं।